

फरवरी 2023

दादावाणी

Retail Price ₹ 20



पूल रूप से आत्मस्वरूप हो जाओगे, तो फिर पॉजिटिव-नेगेटिव शक्तियाँ आपको छू नहीं पाएंगी। फिर असर नहीं होगा।

अहमदाबाद : सतरंग - ज्ञानविधि : ता. 16 से 18 दिसम्बर 2022



अदालतज़ : पारायण : ता. 24 दिसम्बर 2022 से 1 जनवरी 2023



सतरंग



वर्ष : 18 अंक : 4
अखंड क्रमांक : 208
फरवरी 2023
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta

© 2023

Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

Printed & Published by

**Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation**

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at

Amba Offset

B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन: 9328661166-77

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (मदस्यता शुल्क)

5 साल

भारत : 1000 रुपये

वार्षिक

भारत : 200 रुपये

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

‘पॉज़िटिव देखो, आनंद में रहो’ : भाग-2

संपादकीय

अक्रम विज्ञान में, परम पूज्य दादाश्री के भेदविज्ञान के प्रयोग के बाद देह और आत्मा अलग हैं, ऐसा अनुभव होता है, उसके बाद वे किसी भी काल में वापस एक हो ही नहीं सकते! जैसे दही बिलोने के बाद मक्खन और छाछ अलग होने पर फिर किसी भी तरह वे दोनों एकाकार होते ही नहीं, वैसा ही यह विज्ञान है। जो साइंटिफिक है, एकजोकट है, अनुभवगम्य है! इसलिए जबरदस्त क्रियाकारी सिद्ध होता है।

आत्मजागृति में आने के बाद बहुत बार ऐसा होता है कि भूलें होती हैं तब पता चलता है कि ‘यह गलत है, ऐसा नहीं होना चाहिए’। ज्ञानी पुरुष दादाश्री समझाते हैं कि महात्मा का नया (कर्म) चार्ज नहीं होता लेकिन भरे हुए माल का समझाव से निकाल करने पर ही छुटकारा है। जब वह माल निकलता है तब सफोकेशन (उलझन) होती है कि मेरे द्वारा अभी भी दुःख क्यों दे दिया जाता है? पाँच आङ्गा का पालन नहीं हो पाता, मैं ज्ञान में नहीं रहता इत्यादि! इस तरह की सेल्फ नेगेटिविटी उत्पन्न हो जाती है, जो भोगवटे (दुःख) में रखती है।

पिछले साल 2022 में, गुरुपूर्णिमा के निमित्त से महात्माओं को पूज्यश्री ने संदेश दिया था कि, ‘पॉज़िटिव देखो, आनंद में रहो’। उसके अनुसंधान में, प्रस्तुत अंक में, खुद में जहाँ सेल्फ नेगेटिविटी उत्पन्न होती है जैसे कि मैं नहीं कर सकता, बहुत कठिन है, करना है लेकिन होता नहीं, मेरा क्या होगा? कब मोक्ष में जाऊँगा? उसके सामने पॉज़िटिव दृष्टि का विकास कैसे करना है, उसके लिए सोनेरी आपत्सूत्रों और सूत्रों की लिंक में दादाश्री की वाणी का यहाँ पर संकलन हुआ है।

पूर्व कर्म के उदय में भीतर भरे हुए माल के तरह-तरह के तूफान आएँगे, वहाँ हमें स्थिरता पूर्वक हल लाना है, शुद्धात्मा पद में रहकर फाइल नंबर-1 को देखना है। जैसे-जैसे खुद रियल में आता जाएगा, वैसे-वैसे व्यवहार में पॉज़िटिव हो पाएगा। लोग नेगेटिव (रख्ये) से ही मर गए हैं! जितना नेगेटिव बोला जाता है उतने अधिक अंतराय आते हैं। नियम ऐसा है, (हम) जितने नेगेटिव रहेंगे उतने नेगेटिव रिजल्ट आएँगे, जितने पॉज़िटिव रहेंगे उतने पॉज़िटिव रिजल्ट आएँगे। अपने प्रयत्न पॉज़िटिव होने चाहिए। निश्चय करने के बावजूद भी यदि पुरुषार्थ कमज़ोर पड़ जाए तो बार-बार निश्चय करना है, मुझसे नहीं होता ऐसा बोल ही नहीं सकते।

इस नेगेटिव को निकालते-निकालते कब अंत आएगा? अक्रम विज्ञान का आश्वर्य यह है कि व्यक्ति को पॉज़िटिव साइड में बैठा देता है। पॉज़िटिव यानी क्या? कुछ भी नेगेटिव हटाना नहीं है, पॉज़िटिव डालने से नेगेटिव अपनी जगह छोड़कर बाहर निकल जाता है। ऐसा जबरदस्त विज्ञान मिला है तो अब चूकना नहीं है। पॉज़िटिव पुरुषार्थ से निरंतर आनंद में रहना है। ऐसे ज्ञानी मिल जाने के बाद हमें नेगेटिव थिर्किंग करना ही नहीं चाहिए, पॉज़िटिव में रहना चाहिए। महात्माओं के लिए अब निश्चय में पॉज़िटिव भी नहीं और नेगेटिव भी नहीं और व्यवहार में हमेशा के लिए पॉज़िटिव रहकर पुरुषार्थ में प्रगति कर सकें, ऐसी हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

‘पॉज़िटिव देखो, आनंद में रहो’ : भाग-2

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुलिलंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

(सूत्र-1)

यह ‘अक्रम विज्ञान’ तो ‘साइन्टिफिक’ है, विज्ञान है, एकज्ञेक्ट है! और बाकी सब तो ‘डिस्चार्ज’ हो रहा है! मन की सभी क्रियाओं को ‘डिस्चार्ज’ समझ गया, वाणी की सभी क्रियाओं को ‘डिस्चार्ज’ समझ गया, देह की सभी क्रियाओं को ‘डिस्चार्ज’ समझ गया, तो हो गया! मेरी इतनी ही बातें जो समझ गया तो उसे कुछ भी करना नहीं रहता है।

प्रश्नकर्ता : वीतराग विज्ञानी से वीतराग विज्ञान की प्राप्ति के बाद, पूरा समझ में आने के बाद, समझ, ज्ञान में परिणामित होने की कोई समय मर्यादा है क्या?

दादाश्री : समय की मर्यादा तो है न! ज्ञान तो अपने पास हमेशा रहता ही है, उसे प्रगमित होने में टाइम लगता है। जिस प्रकार यह दूध है न, उसमें ज़रा सा दही डालकर अगर तुरंत दही माँगें तो नहीं बनेगा। उसके लिए छः घंटे या आठ घंटे लगते हैं। नहीं लगते? उसी प्रकार से यह समझ ज्ञान में परिणामित होती है पर कुछ समय बाद होता है।

प्रश्नकर्ता : सभी को अलग-अलग तरह से होता है क्या?

दादाश्री : हाँ, हर एक को अलग-अलग तरीके से, जैसे (जिसके) आवरण। किसी को दो घंटे में ही हो जाता है और किसी को दो साल

में भी नहीं होता। आवरण पर आधारित है। मोह पर आधारित है।

प्रश्नकर्ता : महात्माओं को यह ज्ञान दिया है तो अब उनके आचरण में इस ज्ञान का कितना प्रकटीकरण होना चाहिए?

दादाश्री : व्यवहार में प्रकट होने में देर लगेगी! क्योंकि आपका जो आचरण है न, आपका वह आचरण नहीं बदलेगा, इसलिए देर लगेगी। हमारे सभी आचरण खत्म हो चुके हैं इसलिए हमें कोई हर्ज नहीं है। आप मेरे जितने ही ज्ञानी हो लेकिन आपका आचरण ठीक नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो, आप ज्ञानी हैं, और वे भाई भी ज्ञानी हैं, तो उसमें क्या कोई समानता है?

दादाश्री : ज्ञान में अंतर नहीं है, आचरण में अंतर है!

प्रश्नकर्ता : तो क्या उस चीज़ को आचरण में लाना बहुत कठिन काम है?

दादाश्री : आचरण में लाना ही नहीं है। अक्रम अर्थात् आचरण नहीं। वह अनुभव तो अपने आप आता ही रहेगा। क्योंकि यह जो डिस्चार्ज है न, उसका निकाल ही करना है। और कुछ भी नहीं करना है! ‘यह’ मार्ग (अक्रम मार्ग) ज्ञावरदस्ती वाला नहीं है। ‘इस’ मार्ग पर समझकर जाना है। समझ वही आचरण है। ‘मैं’ आचरण में लाने के

लिए मना करता हूँ। जबरदस्ती आचरण सिखाओगे, उससे कुछ नहीं होगा। आचरण में लाना, वह तो अहंकार है। जो समझ में आया, वह वर्तन में आएगा ही।

अपने महात्माओं के आचार भले ही खराब हों फिर भी अंदर से कितने समझदार हैं! हम क्या कहते हैं कि उनके आचरण की तरफ मत देखना। उनकी पञ्चल सॉल्व हो चुकी है। मन के विचार, वाणी के उच्चार और देह के आचार वगैरह जो सब हैं, वे सब डिस्चार्ज हैं। डिस्चार्ज को कोई व्यक्ति बदल नहीं सकता और चार्ज अलग चीज़ है। चार्ज को बदला जा सकता है। आचार-विचार और उच्चार नहीं बदले जा सकते। क्योंकि वे डिस्चार्ज हैं। लोग डिस्चार्ज को ही देखते रहते हैं।

(सूत्र-2)

‘अक्रम’ में तो हम किसी की पात्रता देखते ही नहीं हैं। वैसे देखा जाए तो इस काल में किसी की पात्रता है ही नहीं!

जब तक हम अज्ञानता में होते हैं, तब तक बॉल को फेंकते हैं। उसके परिणाम को नहीं जानतें। अब ज्ञान होने के बाद हमने बॉल फेंकना बंद कर दिया, लेकिन उसे पहले फेंकी थी, इसलिए वह उछलेगी तो सही। पच्चीस-पच्चीस बार उछलेगी। हमने फेंकी, वही एक परिणाम अपना था। अब क्रमिक मार्ग में फेंकने के बाद में उछलती हुई इस बॉल को बंद करने जाते हैं और दूसरी तरफ बॉल का फेंकना जारी रखते हैं। अतः पीछे से बंद करता जाता है और आगे फेंकते जाता है। उसका तो कब अंत आएगा? हम क्या करते हैं कि बॉल को डालना बंद कर देते हैं और फिर जो परिणाम उछलते हैं, उन्हें ‘देखते’

रहने को कहते हैं। ये परिणाम तो डिस्चार्ज के रूप में हैं, इसलिए अपने आप ही बंद हो जाएँगे। ‘हम’ अंदर हाथ नहीं डालें, बस इतना ही देखना है अब।

प्रश्नकर्ता : परपरिणाम में जाने से किसी भी प्रकार की उलझन होती है क्या?

दादाश्री : पर-परिणाम में निरी उलझनें ही हैं। उसमें जाना ही मत। पर-परिणाम को देखना है। यह बॉल अपने परिणाम से डला था, उसके बाद से फिर पर-परिणाम। अब आपको सिर्फ भाव बंद कर देने हैं। ये भाव बंद किस तरह से होंगे? वे ‘ज्ञानी पुरुष’ को सोंप दिए, तो उनसे छूटा जा सकता है। उसके बाद फिर ज्ञानी की आज्ञा में ही रहना है। यह तो निरंतर समाधि देने वाला प्रत्यक्ष विज्ञान है। बॉल को फ़ेकने के बाद में बंद करना और बॉल फेंकने की प्रक्रिया को जारी रखना, वह ‘साइन्टिफिक’ रास्ता नहीं है। तूने बॉल फेंकना बंद कर दिया इसलिए पर-परिणाम अपने आप बंद हो ही जाएगा!

इसीलिए इस ‘अक्रम मार्ग’ में हम किसी की पात्रता नहीं देखते। क्रिया की तरफ मत देखना। ‘उसने’ बॉल फेंकना बंद कर दिया, उसके बाद क्रिया की तरफ नहीं देखना है। हमसे ‘स्वरूप ज्ञान’ प्राप्त कर जाए, उसे पूरी तरह से समझ जाए, उसके बाद वह क्रोध करे तो भी हम कहते हैं कि यह ‘डिस्चार्ज’ के रूप में है। वह क्रमशः बंद हो ही जाएगा। ‘डिस्चार्ज’ किसी के हाथ में है ही नहीं। ‘डिस्चार्ज’ को ‘देखने’ की और ‘जानने’ की ज़रूरत है।

(सूत्र-3)

कोई भी चीज़ ‘ज्ञान’ में आने के बाद वापस वह चीज़ अज्ञान में नहीं जाती, विरोध

उत्पन्न नहीं होता। प्रत्येक सिद्धांत को 'हेल्प' करते-करते सिद्धांत आगे बढ़ता जाता है। किसी भी सिद्धांत का खंडन नहीं करता, विरोधाभास उत्पन्न नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : यह बात सैद्धांतिक है लेकिन कितनी ही बार हम से क्या होता है कि दादा का यह वचन है न, तो एकांतिक रूप से इस वचन को पकड़ लेते हैं कि हमारे आचार-वाचार का कुछ भी नहीं, अब तो सारा अंदर का ही देखो।

दादाश्री : ऐसा पकड़ लेते हैं, बस। ऐसा पकड़ने की ज़रूरत नहीं है। आपको समझने की ज़रूरत है कि यदि ऐसा हो जाए तो भय नहीं रखना चाहिए। लेकिन अगर ऐसा पकड़ लोगे तो आपका कच्चा रह जाएगा।

प्रश्नकर्ता : पकड़ लेते हैं और उसका बचाव करने बैठ जाते हैं।

दादाश्री : नहीं, बचाव करने नहीं बैठना चाहिए। जिस प्रकार से आपका निश्चय तो हमेशा दृढ़ ही रहता है न, कि कभी भी कुएँ में नहीं गिरना है! यहाँ पर अगर सौ-दो सौ कुएँ हों और आपको उनके बीच में से रास्ते पर से आना-जाना हो, फिर भी अँधेरे में गिर नहीं जाते, क्योंकि आपका निश्चय है कि चाहे कुछ भी हो लेकिन मुझे कुएँ में नहीं गिरना है। इसलिए नहीं गिरते हो। लेकिन यदि आप कुएँ का बचाव करने लगोगे तो गिर जाओगे। निश्चय तो होना चाहिए न आपका! यह तो मैं किसलिए बता रहा हूँ? आपको पकड़े रखने के लिए नहीं, आपको भय रहित बनाने के लिए बता रहा हूँ। आपके ये बाह्याचार ऐसे हैं, टेढ़े हैं, उन्हें लेकर परेशान मत होना। उसका अर्थ आपको ऐसा पकड़कर रखने की ज़रूरत नहीं है, आपको तो ऐसा ही रखना है कि ऐसा होना ही

नहीं चाहिए, बस। फिर जो हुआ, उसे 'लेट गो' करते हैं। हमने क्या बताया? व्यवस्थित किसे कहते हैं कि भाई, खुली आँखों से गाड़ी चलाओ और सावधानीपूर्वक चलाओ और फिर यदि टकरा जाए तो वह व्यवस्थित है। फिर अगर आपसे गुनाह हो जाए तो हर्ज नहीं है, वह व्यवस्थित है, लेकिन यह सावधानीपूर्वक होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप हमें निर्भय बनाने के लिए ऐसा कहते हैं लेकिन साथ ही, अभी भी मेरा आचरण ऐसा है, तो उसे देखकर मुझे क्या ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि यह मैंने कैसा माल भरा है?

दादाश्री : वह तो सोचना ही चाहिए कि, 'अरे! मैंने ऐसा माल भरा है!' लेकिन ऐसा तो सब के साथ होता है। सभी थक जाते हैं, परेशान हो जाते हैं और सभी को अच्छा नहीं लगता, लेकिन फिर क्या हो सकता है? अन्य कोई उपाय ही नहीं है न!

यानी आपको तो सिर्फ यह नहीं कहना चाहिए कि 'अब मुझे कोई हर्ज नहीं है'। 'इसमें हर्ज नहीं है' ऐसा बोले तो वह उस नियम को तोड़ देता है। जोखिम उत्पन्न मत करो। 'मुझे अब कुछ भी बाधक नहीं है।' आपको ऐसा गैरज़िम्मेदाराना नहीं बोलना चाहिए। हम इतना कहना चाहते हैं। बाकी हमने जो दिया है, वह तो यही समझकर दिया है कि अब आपको कुछ भी नहीं हो सकता, अगर आप गैरज़िम्मेदाराना नहीं बोलोगे तो!

प्रश्नकर्ता : मुझे लगता है कि ऊपर से मैं अच्छा दिखाई देता हूँ लेकिन मेरा स्वभाव वैसे का वैसा ही है।

दादाश्री : हम जानते ही हैं कि यह माल

ऐसा ही है। एक-एक बोतल (ज्ञान की) पिलाते ही हैं, रोज़। यह स्वभाव पूरा चेन्ज हो जाएगा। परिवार में खोजेंगे कि, ‘अपने भाई कहाँ गए?’ क्योंकि यह ज्ञान तो बहुत पावरफुल है। यह सब कोई घोटाले वाला नहीं है, लेकिन जो कचरा माल भरा है तो उसका अब क्या हो सकता है?

उस भेरे हुए माल का उसने उपयोग करना शुरू कर दिया है इसलिए वह खाली हो जाएगा। अपने पास नई आमदनी नहीं है। नई आमदनी नहीं हो और खर्च होता रहे तो कुछ बचेगा क्या?

बाकी, यह तो सिद्धांत है। इस सिद्धांत का कहीं ब्रेक डाउन (खंडन) होता हो तो मुझे बताओ! अपना सिद्धांत ब्रेक डाउन नहीं होता।

(सूत्र-4)

यह जो समझ में आता है कि, ‘(खुद) यह गलत माल भर लाए हैं’, वहाँ पर आत्मविज्ञान है। जब यह ज्ञान लेता है, तब से अंदर उसे पॉज़िटिव भाव तो हो ही जाते हैं। इंसान में जो नेगेटिव होता है, वह उसे उलझन में डाल देता है, इसलिए पॉज़िटिव ही रहे।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लिए पाँच-पाँच साल हो गए फिर भी अभी तक हमारा मेल क्यों नहीं बैठता?

दादाश्री : अब मेल तो बैठ ही गया कहा जाएगा। ऐसा किस तरह का मेल मिलाना है?

प्रश्नकर्ता : इन भूलों में से।

दादाश्री : अंदर साफ हो जाएगा। अभी निकलता रहेगा माल तो। कचरा जो भरा है न, वह तो निकलेगा ही न! वर्ना टंकी खाली नहीं होगी न। पहले तो, कचरा निकल रहा है ऐसा

समझते ही नहीं थे। अच्छा निकल रहा है, ऐसा ही समझते थे न? उसे संसार कहते हैं, और ‘यह कचरा माल है’, ऐसा समझ लिया तो वह मुक्त होने की निशानी है। यह जो समझ में आता है कि, ‘(खुद) यह गलत माल भरकर ले आए हैं’, वहाँ पर आत्मविज्ञान है, वहाँ प्रज्ञा है वह ‘देखती’ है। देखने में प्रज्ञा है वह।

प्रश्नकर्ता : दादा का ज्ञान मिलने के बाद ज्ञान प्रकाश के सभी प्रवाह क्यों नहीं खुल जाते?

दादाश्री : सभी खुल चुके हैं, लेकिन आपके पहले के जो डेबिट साइड के कर्जे हैं न, वे प्रेजेन्ट होते रहते हैं। बाकी, सारे ज्ञान खुल गए हैं।

प्रश्नकर्ता : सुबह उठकर मैं निश्चय करता हूँ कि मुझे पाँच आज्ञा में ही रहना है, किसी को दुःख नहीं देना है, फिर भी वापस दे ही देता है, ऐसा क्यों?

दादाश्री : दे देते हो, वह सब तो अंदर माल भरा है इसलिए। फिर आपने अब निश्चय किया है न, नए सिरे से साफ व्यापार करना है, तो अब साफ हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : कई बार, हमने चाहे कितना भी निश्चय किया हो, फिर भी बोल ही देते हैं।

दादाश्री : नहीं बोलना हो तब भी बोल ही देते हैं। गोली छूट जाती है। अपने वश में नहीं है, वह गोली। उसे दो-चार घंटे तक मोड़ लें और दो-चार घंटे तक दबाकर रखें फिर भी वापस निकल ही जाती है।

प्रश्नकर्ता : मैं मन में ऐसा निश्चय करता हूँ कि, ‘ऐसा नहीं करना चाहिए,’ उसके बावजूद भी बोल देता हूँ।

दादाश्री : उस समय आपका कुछ नहीं चलेगा। आपको सिर्फ उसके लिए प्रतिक्रिया करना है, इतना ही उपाय है। अन्य कोई उपाय नहीं है। उसे बंद नहीं करना है लेकिन, 'ऐसा नहीं हो तो अच्छा', ऐसा आपको चंदूभाई से कहना है। उसके बाबजूद भी जो माल है, वह निकले बगैर रहेगा ही नहीं। टंकी में डामर भरा होगा तो डामर निकलेगा और केरोसीन भरा होगा तो केरोसीन निकलेगा। जैसा भरा होगा वैसा निकलता रहेगा। लेकिन यह अक्रम विज्ञान है, यानी कि खुद के कर्म खचाखच भरे हुए हैं, उन सभी का निकाल करना बाकी है और यह ज्ञान प्रकट हो गया है, ज्ञान से क्या हो गया? खुद की चिंताएँ और वह सब बंद हो गया और सिर्फ इनका निकाल करना बाकी रहा। निकाल होता रहे, वैसे-वैसे आनंद बढ़ता जाता है। चिंता बंद हो जाती है, उपाधि बंद हो जाती है। आपको कोई उपाधि-चिंता रहती है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, आपने तो इतना अधिक सरल-सुगम मार्ग बता दिया है लेकिन फिर यदि सतत जागृति नहीं रखेंगे और यदि पाँच आज्ञा का पालन नहीं करेंगे तो दादा ने जो ज्ञान दिया है वह शस्त्र के रूप में परिणित होगा।

दादाश्री : तो फिर भटक जाएगा। फिर भी बिगड़ा हुआ घी दीये में काम आए बगैर तो रहेगा नहीं, कई जन्म कम हो जाएँगे। लेकिन आप जैसा चाहते हो, उस स्थान पर जल्दी नहीं पहुँच सकोगे, अगर पाँच आज्ञाएँ बंद हो गईं, तो। यह पूरा ही काल कुसंग वाला काल है। घर में कुसंग, ऑफिस में कुसंग, व्यापार में कुसंग, जहाँ देखो वहाँ पर कुसंग, कुसंग और कुसंग! यदि आप यहाँ से दूसरी जगह जाओगे न, तो वह आपके लिए कुसंग है। अब ऐसे

काल में यदि ये पाँच आज्ञा नहीं होंगी तो कोई भी कुसंग उसे खा जाएगा। अतः जो पाँच आज्ञा पालन करेगा, उस पर कुसंग का असर नहीं होगा। वर्ना यहाँ पर पड़े रहो। अगर पाँच आज्ञा का पालन नहीं करना हो तो मेरे पास पड़े रहो। फिर इस कुसंग का असर नहीं होगा।

फिर भी जब से यह ज्ञान लेता है, तब से अंदर उसे पॉज़िटिव भाव तो हो ही जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : हो ही जाते हैं। ठीक है, दादा। आपने कहा है कि पॉज़िटिव हो गए तो फिर संयोग मिल जाएँगे।

दादाश्री : इंसान में जो नेगेटिव होता है, वह उसे उलझन में डाल देता है। इसलिए पॉज़िटिव ही रहो। सिर्फ ये पॉज़िटिव लाइन ही सभी भगवान के पक्ष की है। पॉज़िटिव लाइन सभी भगवान के पक्ष की हैं और नेगेटिव लाइन हैं, वे शैतान पक्ष की हैं।

(सूत्र-5)

इस विज्ञान से, मोक्ष के लिए उसे सावधान करने वाली प्रज्ञाशक्ति उत्पन्न हो जाती है। उसके बाद उसे खुद पॉज़िटिव रहना चाहिए। नेगेटिव सेन्स नहीं रखना चाहिए। पॉज़िटिव अर्थात् उसमें अपनी खुशी होनी चाहिए और पॉज़िटिव सेन्स रखें और यदि वह खुद ठीक तरह से रहेन, तो अंदर ऐसा आयोजन हो जाता है कि संसार की कोई अड़चन स्पर्श नहीं होने देता!

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा में तन्मयाकार रहने को कहा है, तो इसे जरा ठीक से खुलासा करके समझाइए।

दादाश्री : यह सारा प्रज्ञाशक्ति का ही काम है। लेकिन जब प्रज्ञाशक्ति अपना काम नहीं

संभालती, तब वह 'डिस्चार्ज' अहंकार ही सारा काम करता रहता है। जब वह ऐसा करे तब 'हमें' उसे देखना है कि वह किसमें तन्मयाकार है! इसमें, प्रज्ञा में तन्मयाकार रहना चाहिए, उसके बजाय उसमें तन्मयाकार, स्लिप हो जाता है। अगर उसमें चला जाएगा तो 'अजागृति' रहेगी। यदि 'जागृति' रहेगी तो प्रज्ञा में रह पाएगा।

प्रश्नकर्ता : आपने जो ज्ञान दिया है तो उसे जागृति में तो रहना ही है।

दादाश्री : उसकी इच्छा तो होती है लेकिन रह नहीं पाता। वह आदत पड़ी हुई है न! पिछली आदत पड़ी हुई है इसलिए फिर उस तरफ चला जाता है। लेकिन जिसका भाव स्ट्रोंग है, वह तो गए हुए को भी वापस बुला लेता है कि 'अरे! नहीं जाना है'। खुद को पता तो चलता है न?

अर्थात् अब अगर आपको मोक्ष में जाना है तो प्रज्ञा के प्रति सिन्सियर रहो और यदि मौज-मजे उड़ाने हैं तो कुछ देर के लिए उस तरफ चले जाओ। अभी अगर कर्म के उदय ले जाते हैं तो वह अलग बात है। कर्म का उदय घसीटकर ले जाए तो भी हमें इस तरफ का रखना है। नदी उस तरफ खींचेंगी लेकिन हमें तो किनारे पर जाने के लिए ज़ोर लगाना है। नहीं लगाना चाहिए या फिर जैसे वह खींचे वैसे खिंचे जाना है?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यदि उसका निश्चय पक्का होगा, तभी सिन्सियर रहेगा न?

दादाश्री : पक्का होगा तभी रह पाएगा न! वर्ना फिर तो जिसका निश्चय ही नहीं है, उसका क्या? नदी जिस तरफ खींचेंगी उसी तरफ चला जाएगा। किनारा तो न जाने कहाँ रह जाएगा। हमें तो किनारे की तरफ जाने के लिए ज़ोर लगाना

चाहिए। हमें इस तरफ आने के लिए हाथ-पैर मारने चाहिए। थोड़ा बहुत, जितना खिसक पाए, उतना ठीक है। तब तक तो अंदर ज़मीन में आ जाएगा।

अर्थात् इस विज्ञान से उसमें मोक्ष में (ले जाने) के लिए उसे सावधान करने वाली प्रज्ञाशक्ति उत्पन्न हो जाती है। उसके बाद उसे खुद पॉज़िटिव रहना चाहिए। नेगेटिव सेन्स नहीं रखना चाहिए। पॉज़िटिव अर्थात् उसमें अपनी खुशी होनी चाहिए और पॉज़िटिव सेन्स रखते भी हैं सभी और फिर इस संसार की किसी अड़चन का असर भी नहीं होने देते। यदि वह खुद ठीक से रहे न, तो संसार की किसी अड़चन का असर नहीं होने दे, ऐसा आयोजन हो जाता है अंदर। क्योंकि जब आत्मा प्राप्त नहीं हुआ था अर्थात् भगवान् प्राप्त नहीं हुए थे, तब भी संसार चल ही रहा था तो क्या प्राप्त होने के बाद वह बिगड़ जाएगा? तब कहते हैं, नहीं बिगड़ेगा।

(सूत्र-6)

सुखी कब दिखाई देगा कि खुद 'राइट अन्डरस्टैन्डिंग' (सही समझ) पर आ जाएगा, पॉज़िटिव पर आ जाएगा। करेक्ट पॉज़िटिव पर आ जाएगा। यह माना हुआ पॉज़िटिव तो इनकरेक्ट है।

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन ऐसा है न, कि नेगेटिव ही सारी ज़िंदगी देखा है, यानी वह नेगेटिव ही उसके लिए फिर पॉज़िटिव के समान हो जाता है, वही तकलीफ है।

दादाश्री : नहीं। पॉज़िटिव हो नहीं जाता, सिर्फ वह पॉज़िटिव मानता है। बिलीफ ही है। अब बिलीफ यानी, आपके पास बैंक में दो लाख रुपये हैं, ऐसी बिलीफ रखने से क्या बैंक

(सूत्र-7)

आपका सेपरेट हो ही गया है। अब आपको जो उलझा रहा है, वह आपका खुद का ही है, आप गलत की ओर रहते हो, नेगेटिव बाबत में रहते हो (लेकिन) पॉज़िटिव साइड में रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यह ज्ञान लेने के बाद 'शुद्धात्मा' बोलते हैं, क्या वह साइकोलॉजिकल इफेक्ट है ?

दादाश्री : नहीं, वह साइकोलॉजिकल इफेक्ट नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा, मैं जब 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलता हूँ तब...

दादाश्री : बोलने की ज़रूरत नहीं है, अपने आप ही आता है अंदर से, 'मैं शुद्धात्मा हूँ'।

प्रश्नकर्ता : तो दादा, जब मैं बहुत भय में होता हूँ तभी ऑटोमैटिकली आता है, बाकी समय नहीं आता।

दादाश्री : तो वही सच है, वही अच्छा है। वह तो 'आय'-‘माय’ का सेपरेशन हो गया है। जब भीतर भय लगता है तब भीतर से आता है उस समय। 'आय'-‘माय’ सेपरेट हो ही गया है, इसलिए आ जाता है।

तेरे पापा-मम्मी का सेपरेट हो गया, इसलिए दौड़ते आए हैं। तेरा भी सेपरेट हो चुका है, परंतु तू उलझन में है। इसलिए तेरा सब उलझ रहा है।

प्रश्नकर्ता : कैसे उलझा हुआ हूँ?

दादाश्री : भय लगता है, तब तो फिर तुझे समझ में आता है न ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, भय लगता है तब।

वाले आपको स्वीकार करेंगे? ऑल दिस आर सोंग बिलीफ्स। यानी इस रास्ते पर कभी भी कोई व्यक्ति सुखी नहीं दिखाई देगा। यह रास्ता ही ऐसा उल्टा है कि कोई व्यक्ति सुखी हो ही नहीं सकता। प्रधानमंत्री हो या प्रेसिडन्ट ऑफ इन्डिया (राष्ट्रपति) हो या राजा हो, सभी दुःखी। सुखी कब दिखाई देगा कि जब खुद 'राइट अन्डरस्टैन्डिंग' (सही समझ) पर आ जाएगा, पॉज़िटिव पर आ जाएगा। करेक्ट पॉज़िटिव पर आ जाएगा। यह माना हुआ पॉज़िटिव तो इनकरेक्ट है। यह तो गलत पॉज़िटिव है, जहाँ नेगेटिव है वहाँ पॉज़िटिव मान बैठे हैं। नहीं मान बैठे हैं?

प्रश्नकर्ता : सारी ज़िंदगी अँधेरे में ही चलते आए हैं, तो अब इस अँधेरे को निकालना है तो वह कैसे जाएगा?

दादाश्री : अनंत जन्मों से अँधेरे में ही चलते आए हैं। भटक, भटक, भटक, भटक, भटक और जीव ने पॉज़िटिव देखा ही नहीं है। यदि पॉज़िटिव देखेगा तब तो ठिकाने पर आ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : पॉज़िटिव की पहचान ही नहीं रही है।

दादाश्री : पहचान ही नहीं रही है और पॉज़िटिव को ही नेगेटिव मानते हैं। नेगेटिव को पॉज़िटिव मानते हैं।

प्रश्नकर्ता : दुर्गंध को ही देखते रहे हैं न, सुर्गंध का ख्याल ही नहीं आया!

दादाश्री : उसका भान ही कैसे होगा? इसलिए फिर हम उसे भान में लाते हैं। ज्ञान देकर भान में लाते हैं। उसके बाद वह कहता है कि, हाँ, यह 'मैं' नहीं हूँ, यह चंदुभाई, मैं नहीं हूँ।

दादाश्री : आपका सेपरेट हो ही चुका है। अब आपको जो उलझा रहा है, वह आपका खुद का ही है, आप गलत की ओर रहते हो, नेगेटिव बाबत में रहते हो। परंतु पॉज़िटिव साइड में रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : पॉज़िटिव में कैसे रह सकते हैं?

दादाश्री : आप पॉज़िटिव में रहते हो, फिर भी आपके मन, बुद्धि जो हैं वे आपको घुमाते रहते हैं। गलत शंका उत्पन्न करते हैं कि 'मेरा नहीं हुआ है'। आप मेरे साथ क्यों रहते हो? मेरे साथ अच्छा क्यों लगता है? क्योंकि मेरा बिलकुल पॉज़िटिव हो गया है, हंड्रेड परसन्ट हो गया है।

प्रश्नकर्ता : दादा जो कहते हैं, वे सभी बातें साइन्टिफिक और सही हैं लेकिन मुझे उनका एक्सपीरियन्स (अनुभव) नहीं हुआ है।

दादाश्री : एक्सपीरियन्स हो गया है, यह वही है। जो एक्सपीरियन्स हुआ है, वह आपको समझ में नहीं आता। वही एक्सपीरियन्स आपको यहाँ मेरे पास लेकर आता है और वही एक्सपीरियन्स मेरे साथ रखता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने उस दिन ऐसा कहा था कि 'अभी तक इस ज्ञान का किसी को अनुभव नहीं हुआ है। सिर्फ़, मैं कहता हूँ और शब्द से वह समझ जाता है और बोलता है, बस उतना ही'।

दादाश्री : वह अनुभव तो सभी को हो गया है। मैं जो कहना चाहता हूँ, वह अलग कहना चाहता हूँ।

प्रश्नकर्ता : वह अनुभव और आप जो कहते हैं उस अनुभव में क्या फर्क है?

दादाश्री : उसकी तो बातें ही नहीं कर सकते। वे बातें आपके काम की हैं ही नहीं। आप तो मेइन लाइन पर आ जाओ।

(सूत्र-8)

मूल रूप से आत्मस्वरूप हो जाओगे, तो फिर पॉज़िटिव-नेगेटिव शक्तियाँ आपको छू नहीं पाएंगी। फिर असर नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : हम आत्मा हैं, मूलतः आत्म स्वरूप हैं, तो इन पॉज़िटिव-नेगेटिव शक्तियों को हम कुछ नहीं कहते फिर भी वे हमें परेशान क्यों करती हैं?

दादाश्री : यदि मूल रूप से आत्मस्वरूप हो जाओगे, तो फिर पॉज़िटिव-नेगेटिव शक्तियाँ आपको छू नहीं पाएंगी। फिर असर नहीं होगा। लेकिन अभी मूल रूप से आत्मस्वरूप हुए नहीं न!

प्रश्नकर्ता : यह पॉज़िटिव-नेगेटिव जो होता है, वह भ्रम है न, या अहंकार की वजह से होता है?

दादाश्री : नहीं, वह भ्रम नहीं है, सही बात है। आपकी इच्छा अनुसार सबकुछ होता रहता है, आप जो भी इच्छा करते हैं, वह सबकुछ होता ही रहता है। उल्टा करने पर भी सीधा ही होता है, ऐसा पॉज़िटिव का स्वभाव है और किसी समय, नेगेटिव का समय ऐसा आता है कि सबकुछ करते हैं फिर भी, सीधा करने पर भी सब उल्टा होता है।

यह जो जीवन जीते हैं न, उसमें दो तरह के रिजल्ट (परिणाम) आते हैं। जब पॉज़िटिव रिजल्ट आता है, तब सबकुछ आपकी इच्छा अनुसार होता रहता है। यानी आपको सभी एविडन्स

(संयोग) मिलते ही रहते हैं। आपकी इच्छानुसार संयोग मिलते रहते हैं। लेकिन जब नेगेटिव आता है, उस समय आपकी इच्छा से सब विपरीत ही होता है। तो ये पॉज़िटिव-नेगेटिव दो शक्तियाँ काम कर रही हैं। आपको इन दो शक्तिओं के बश में रहना पड़ता है।

शक्तियाँ तो भीतर भरी पड़ी हैं। यदि ऐसा कहे कि 'मुझे नहीं हो सकता', तो वैसा होता है। इस नेगेटिव ने तो मार दिया है लोगों को। नेगेटिव रवैये से ही मर गए हैं लोग।

(सूत्र-9)

'एकदम' नेगेटिव बोलते हैं, उससे अंतराय पड़ते हैं और **'पॉज़िटिव'** से अंतराय नहीं पड़ते।

ये तो सारे अंतराय हैं, वर्ना आप पूरे ब्रह्मांड के मालिक हो। तब कहता है, 'अनुभव क्यों नहीं होता?' सभी अंतराय छूट गए तो आप मालिक तो हो ही। अंतराय किसने खड़े किए हैं? भगवान महावीर ने? तब कहते हैं, 'नहीं, तूने खुद ने ही'। 'यू आर होल एन्ड सोल रिस्पोन्सिबल फॉर यॉर लाइफ।' खुद ही खुद ने खड़े किए हैं। जरा बारीकी से नहीं चलेंगे तो फिर अपनी गाड़ी कैसे चलेगी? यहाँ पर अंतराय कहते हैं कि 'बारीकी से हिसाब सेट कर लो। इन भाई को मोटा रास नहीं आएगा,' कहेगा। हाँ! अरे, अनंत शक्ति वाला है तो तुझे ऐसा सोचने की ज़रूरत ही कहाँ रही? जिस तरह से चल रहा है उसे ईंजिली (सरलता से) देखता रह न, चुपचाप! 'मैं क्या करूँ,' कहता है। 'वहाँ पर किराया कम पड़ जाएगा तो लॉज में कैसे जाऊँगा?' अरे, घनचक्कर! ऐसा नहीं कहते। सबकुछ तैयार ही है वहाँ पर। ऐसा कहना, वही उसके अंतराय हैं।

और फिर क्या वे उसे फल नहीं देंगे? अंतराय डालने वाला खुद ही है।

अंतराय अर्थात् खुद की इच्छानुसार सफलता न मिलना। वर्ना इच्छानुसार अर्थात् इच्छा होते ही हाजिर हो जाए ऐसा है। तब क्या कोई भी पुरुषार्थ नहीं करना पड़ेगा? नहीं, सिर्फ इच्छारूपी पुरुषार्थ या इच्छा होनी चाहिए। हमारा काफी कुछ भाग अस्सी प्रतिशत, हमारी इच्छा होते ही तुरंत हमारे लिए सबकुछ हाजिर हो जाता है। इच्छा न हो फिर भी सभी चीजें आती ही रहती हैं।

हम ऐसा एक भी अक्षर नहीं बोलते। हमें अंतराय हैं ही नहीं। निःअंतराय पद में हैं हम। सभी चीजें हम जहाँ बैठे हों, वहाँ पर हाजिर हो जाती हैं। उसमें उस चीज़ के बारे में सोचा तक नहीं हमने, फिर भी हाजिर हो जाती है। आपके साथ ऐसा क्यों नहीं होता? तब कहते हैं, अंतराय डाले हैं। 'यह मुझे मालूम नहीं है, यह मुझ से नहीं होगा।' कहा तो फिर वह चीज़ क्या कहती है? 'तुझे मालूम नहीं है, तो बेवकूफ यों ही बैठा रह। मेरा अपमान क्यों कर रहा है?' ये सब जो चीजें हैं न, वे मिश्रचेतन हैं। यह जो लकड़ी है वह भी मिश्रचेतन से बनी हुई है। वह भी पुद्गल है। ये परमाणु नहीं हैं, यह तो पुद्गल है। उस पर भी यदि कभी आप द्वेष करोगे तो उसका आपको फल मिलेगा। अगर कहोगे कि 'यह फर्नीचर मुझे अच्छा नहीं लगा।' तब फर्नीचर कहेगा 'तेरे और मेरे बीच में अंतराय।' दोबारा वह फर्नीचर नहीं मिलेगा, ऐसा नियम है। लोगों ने ही ये अंतराय डाले हैं।

सभी जगह ये खुद के ही खड़े किए हुए अंतराय हैं। एक-एक शब्द पर अंतराय डालते हैं। बिल्कुल नेगेटिव बोलने से अंतराय पड़ते हैं लेकिन पॉज़िटिव से अंतराय नहीं पड़ते।

(सूत्र-10)

यदि विचार बिगड़ा तो दाग पड़ेगा, इसलिए विचार मत बिगाड़ना, यह समझना है। अपने सत्संग में तो खास ध्यान रखना है कि विचार नहीं बिगड़ें। विचार बिगड़ने से सबकुछ बिगड़ जाता है।

कोई मित्र बीमार हो तो उसके घर पर कहना पड़ता है कि, ‘इसका इलाज करवाइए’। अंदर ऐसे विचार भी आते हैं कि यह बच जाएगा ऐसा लगता नहीं है, ऐसे उल्टे विचार ज्यादा कमज़ोर बना देते हैं। ऐसे विचार काम के ही नहीं होते। ऐसे विचार ही संसार हैं, उनका स्वभाव ही चंचल है, लेकिन आपको उसमें चंचल नहीं हो जाना चाहिए। वे तो आते रहेंगे, आपको तो, जब वे आँ तब देखते रहना है और जानते रहना है। उन्हें जाना, इसका मतलब ‘शुद्धात्मा’ हाजिर ही है। उन विचारों को तो ऐसा जानना है कि पहले नगीनभाई गए, फिर चतुरलाल गए।

प्रश्नकर्ता : विचार बहुत आ गए, लेकिन बाद में पता चलता है कि ये तो विचार आ गए। तब क्या उसे तन्मयाकार होना कहा जाएगा?

दादाश्री : विचारों में बह नहीं गए तो उनसे जुदा ही हैं। अगर इन विचारों को नहीं पकड़ा तो आत्मा, आत्मा ही रहा। कई बार ऐसा होता है कि एकसाथ विचार फूटते हैं तो जागृति नहीं रहती, लेकिन बाद में ऐसा जाना कि ये विचार तो बला हैं, वही बताता है कि आत्मा हाजिर है।

स्वरूप प्राप्ति के बाद विचारों का फोर्स आए तो उससे और कोई परेशानी नहीं है, लेकिन अपना सुख रुक गया, वही नुकसान है।

जब बच्चों के स्कूल की छुट्टी होती है, तब कितने बच्चे एक साथ निकलते हैं? घंटी बजती है कि शुरूआत में ढेर सारे बच्चे निकलते हैं और फिर तो एक-दो, एक-दो बच्चे ही निकलते हैं। वैसा ही इन विचारों का भी है! लेकिन आत्मा इसमें भी खुद का ज्ञाता-द्रष्टापन छोड़ता नहीं है, मात्र सुख रुक जाता है। आत्मा कभी भी खुद का स्वभाव नहीं छोड़ता और विभाव में आता ही नहीं है। ‘ज्ञानी पुरुष’ के पास यह सब विस्तारपूर्वक समझ लेना चाहिए ताकि कोई परेशानी नहीं आए।

यदि विचार बिगड़ा तो दाग पड़ेगा, इसलिए विचार मत बिगाड़ना, यह समझना है। अपने सत्संग में तो खास ध्यान रखना है कि विचार नहीं बिगड़ें। विचार बिगड़ने से सबकुछ बिगड़ जाता है। विचार आया कि मैं गिर जाऊँगा तो गिरा। इसलिए, जैसे ही विचार आँ तो तुरंत ही प्रतिक्रमण करो, आत्मस्वरूप बन जाओ। अपना धर्म क्या कहता है कि असुविधा में सुविधा देखो। रात को मुझे विचार आया कि, ‘यह चादर मैली है’, लेकिन फिर एडजस्टमेन्ट कर लिया तो इतनी अच्छी लगती है कि पूछो मत। पँचेन्द्रिय ज्ञान असुविधा दिखाता है और आत्मा सुविधा दिखाता है। इसलिए आत्मा में रहो।

(सूत्र-11)

व्यक्ति को कितना सोचना है वह समझ ले तो बहुत हो गया। बहुत से दुःख कम हो जाएँगे। थिंक फोर टुडे, नोट फोर टुमोरो!

देखो न, कहाँ तक का सोच लेते हैं! दुकान बारह महीने नहीं चली हो तो ‘दुकान का दिवालिया निकल जाएगा और दिवालिया निकलने के बाद ऐसा हो जाएगा, उसके बाद मेरी स्थिति ऐसी हो जाएगी’। ये लोग वहाँ तक का सोच लेते हैं!

कहाँ तक का सोच लेते हैं? एक व्यक्ति ने मुझसे कहा था, 'सोचे बगैर चलेगा क्या? सोचे बगैर दुनिया कैसे चलेगी?' तब मैंने कहा, 'तू इस बोम्बे सिटी में ड्राइवर के पास वाली सीट में बैठे और ड्राइवर से पूछे कि 'तू क्या-क्या सोच रहा है? अब ऐसे-ऐसे जाऊँगा, ऐसा करूँगा, वैसा करूँगा, ऐसे विचार कर रहा है? वह क्या करता है?' ऐसे कुछ भी विचार नहीं करता। यानी हर एक व्यक्ति को कुछ हद तक ही विचार करना चाहिए। बाद में, खुद का विचार बंद कर देना, स्टॉप ही कर देना चाहिए, हर एक बाबत में। लेकिन आप तो, जब मरने की बातें होती हैं तब तुरंत स्टॉप कर देते हैं, परंतु आप इसमें, व्यापार में बंध नहीं करते। आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है, विचार की भी कुछ हद होती है।

दादाश्री : स्टॉप करना आता है, नहीं आता ऐसा नहीं है। यह तो (उसमें ही) रमणता करते हैं। अक्ल लड़ाते हैं। बेटा अभी से लड़ाई करता है तो 'बूढ़ापे में मेरा कौन होगा?' 'अरे भाई! ऐसा, यहाँ तक सोच लिया!' आज के दिन का ही, भगवान ने कल का सोचने के लिए मना किया है। थिंक फोर टुडे, नोट फोर टुमोरो! (आज के लिए विचार करो, कल के लिए नहीं!) और वह भी कुछ ही बाबत में। गाड़ी में बैठा हो, फिर 'टकरा जाएगी तो क्या होगा? टकरा जाएगी तो क्या होगा?' छोड़ो न, वह विचार बंद कर देना है। यह तो, ऐसा विचार करता है ठेठ, 'दुकान का दिवाला निकल जाए, उसके बाद की स्थिति कैसी होगी और उसके बाद की स्थिति कैसी होगी? शुक्रवारी में भीख माँगनी पड़ेगी'। ऐसा फिर पत्ती से कहता है, 'भीख माँगनी पड़ेगी'। 'अरे, कहाँ से देखकर आया?' 'ऐसा मैंने सोचा'

कहता है। अब यह अक्ल का बोरा! अब इसे अक्ल वाला कहेंगे? अक्ल तो उसे कहते हैं कि निरंतर सेफसाइड रखें। कहीं भी जो सेफसाइड तोड़े, उसे अक्ल कहेंगे ही कैसे? और अक्ल तो सेफसाइड को संभाल ले, वहाँ तक कर सके ऐसी है। यानी व्यक्ति को कितना सोचना है, वह समझ ले तो बहुत हो गया, बहुत से दुःख कम हो जाएँगे।

(सूत्र-12)

'नापसंद' शब्द बोला तभी से वह चक्कर में आ गया। 'नापसंद', ऐसा बोल ही नहीं सकते। यह शब्द डिक्षानी में नहीं होना चाहिए। 'नापसंद' यह तो एक तरह की जेल है, हथकड़ी है। 'नापसंद', ऐसा बोले, यानी हथकड़ी लगी।

प्रश्नकर्ता : पहले मुझे ऐसा होता था कि बहुत विचार आते थे तब ऐसा लगता था कि ये क्या? डूब मरो यहाँ सूरसागर (तालाब) में!

दादाश्री : आप कहना कि तू डूब मर! मुझे तो अभी इस दुनिया का कल्याण करना है और इस जन्म में ज्ञानी पुरुष मिलें हैं, किसी जन्म में नहीं मिलते, यदि तुझे यह दुःख है तो तू डूब मर, जा!

तुझे ऐसा लगता था कि 'इसका क्या करना है? इसके बजाय डूब मरें, डूबकी मारेंगे तो शांति से छुटकारा हो जाएगा(!)'

प्रश्नकर्ता : हमसे और कुछ हो सके, ऐसा नहीं है, ऐसा लगा था।

दादाश्री : ऐसा क्या होता है जिससे ऐसा लगा?

प्रश्नकर्ता : बहुत विचार आते हैं, उसमें

हमें करना होता है कुछ और विचार आते हैं कुछ।

दादाश्री : लेकिन वे विचार आए, उसमें आपको क्या? विचार तो आएँगे। वे विचार ज्ञेय हैं और आप ज्ञाता हैं। ज्ञान मिलने के बाद आपको क्या लेना-देना है? देखो न, इतने बड़े हो गए फिर भी कहते हैं, 'मरना है, ऐसे विचार आते हैं'।

इस कल्याण के तंबू में यों हाथ लगाएँगे तो भी तंबू खड़ा रहेगा, सहारा देंगे तब भी दो लोगों का कल्याण हो जाएगा।

'नापसंद' शब्द बोला तभी से वह चक्कर में आ गया। 'नापसंद', ऐसा बोल ही नहीं सकते। यह शब्द डिक्षणरी में नहीं होना चाहिए। 'नापसंद' यह तो एक तरह की जेल है, हथकड़ी है। 'नापसंद', ऐसा बोले तो समझो हथकड़ी लगी।

(सूत्र-13)

मैं क्या कहता हूँ, कि आपको जो कुछ भी विचार आए, उन्हें मेरे वहाँ रीडिरेक्ट कर दो। गो टु दादा। वर्ना सब असर करेगा।

प्रश्नकर्ता : यदि ऐसे पॉजिटिव विचार करें तो अच्छा ही होगा न! ऐसे पॉजिटिव विचार करें कि, मेरा अच्छा ही होने वाला है। मुझे ऐसा बनना है!

दादाश्री : हाँ, तब तो हर्ज नहीं है। लेकिन वह जो नेगेटिव शब्द है न, उसे पहले हटा देना चाहिए। बाद में पॉजिटिव विचार करना चाहिए। वर्ना, एक ओर उस शब्द का दबाव बढ़ता जाएगा और वह शब्द भी बढ़ता जाएगा। दोनों का मेल नहीं होगा। पहले वह शब्द हटा देना चाहिए। उस शब्द को निकाल देना चाहिए।

'यह तो मेरी आँख से कम दिखाई देता है,' ऐसा कहता था। जब पैंतीस साल का था न, तब कहता था। 'कम दिखाई देता है।' अरे! आँख को बदल दे न। क्या आँख के पर्याय नहीं बदल सकते? क्या हमेशा के लिए आँख के (जिसमें कम देखाई देता है) वे पर्याय रखने हैं तुझे? मैंने कहा, बोल कि 'आँख से मुझे अच्छा दिखाई देता है'।

प्रश्नकर्ता : आँख से अच्छा दिखाई देता है।

दादाश्री : यह ऐसा बढ़ा-चढ़ाकर बोलते हैं। 'मेरी आँख अच्छी हो गई', तो फिर आँख से अच्छी तरह से दिखने लगता है। अभी मैं चौहत्तर साल का हूँ, लेकिन मैं कभी बयालीस साल का था या नहीं था? तब लोग क्या कहते थे कि 'बयालीस साल के हैं, इसलिए अखबार नहीं पढ़ सकते'। वे ऐसे बारीक अक्षर रहते हैं न, तब लोगों से सुना था कि बयालीस साल के होने पर नजदीक के चश्मे के नंबर आते हैं। तब मैंने कहा, बयालीस साल के हो गए हो इसलिए नजदीक के चश्मे के नंबर आ गए हैं, इसलिए फिर चश्मा लाया। चश्मा लाने के बाद साल-डेढ़ साल लगाया। उसके बाद एक व्यक्ति, मेरा चश्मा यों रखा था न, तो उसे लेकर यों देखने लगा। फिर कहने लगा 'मैं ज़रा अखबार पढ़ूँ'। मैंने कहा, 'पढ़ो न'! कहता है, 'क्या बताऊँ, आपके इस चश्मे से मुझे बहुत अच्छा दिखाई देता है'। तब मैंने कहा, 'इसे ले जाओ। अब लौटाना मत'। फिर मैं तुरंत पढ़ने लगा तो मुझे दिखने लगा। सभी बारीक अक्षर दिखाई दिए। अभी भी सभी बारीक अक्षर दिखाई देते हैं। शाम को साढ़े छः बजे भी पढ़ पाता हूँ। दिन में तो हर कोई पढ़ सकता है, लेकिन शाम

को साड़े छः बजे भी मैं पढ़ पाता हूँ। तो हमें कैसा बोलना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : ‘अच्छा है’, पॉज़िटिव।

दादाश्री : ‘नेगेटिव बोला’ तो उस पर ध्यान मत दो उसे एक तरफ रख दो। आप उस पर ध्यान मत दो या तो दादा को रीडिरेक्ट कर दो। उसके लिए कोई टिकिट नहीं होती। मूल मालिक नहीं मिलने से वह (नेगेटिविटी) अभी भी वहाँ रहती है (खुद के साथ ही)। मैं क्या कहता हूँ, कि आपको जो कुछ भी विचार आए, उन्हें मेरे वहाँ रीडिरेक्ट कर दो। गो टु दादा! वर्ना सब असर करेगा। एक शब्द तो बहुत असर बाला है। असर बाली चीज़ें हैं ये, ऐसा मत करना। मुझे बुखार आया हो तो मैं कभी भी नहीं कहता कि ‘मुझे बुखार आया है’। ऐसा कहने से असर होता है।

लोग ऐसा कहते हैं न, ‘मेरा दिमाग़ काम नहीं करता’! अरे घनचक्कर, ऐसा बोला? कहता है, ‘मेरा दिमाग़ काम नहीं करता’। इसीलिए तो वहाँ (दिमाग़) पर हमेशा बोझ रहता है और बोझ रहने से फिर धीरे-धीरे बंद हो जाता है। आपने बोला और हस्ताक्षर कर दिए। तो फिर आप दादा के वहाँ रीडिरेक्ट कर देना, कोई हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : रीडिरेक्ट करने का आपने उत्तम रास्ता बताया।

दादाश्री : हाँ, मेरे वहाँ भेज देना। मैं सभी से यही कहता हूँ कि सब मेरे वहाँ भेज देना, भाई। तुझ पर बोझ तो रहेगा ही। मनुष्य है, इसलिए बोझ रहेगा।

(सूत्र-14)

आपको अग्रसोच से मुक्त करने के लिए

तो मैंने व्यवस्थित कह दिया है कि भाई, अब अग्रसोच क्यों कर रहे हो? आपको ‘व्यवस्थित’ कह दिया इसलिए सबकुछ उसमें आ ही गया।

किसी को पक्षाघात हो गया हो, उसे देखे तो इसे भी विचार आता है कि, ‘अरे, मुझे पक्षाघात हो जाएगा तो क्या होगा?’ अब, अक्लमंद को विचार करने की ज़रूरत है? अक्लमंद ही विचार करता है न, ऐसा! ऐसी अक्ल किस काम की? जो अक्ल दुःख लाए, उस अक्ल को अक्ल कहेंगे ही कैसे? हो उस दुःख को विदा कर दे, उसे अक्ल कहते हैं। यह तो, दुःख और दुःख ही है। मुझे यदि पक्षाघात हो जाएगा तो मेरा क्या होगा? मेरा कौन? यह बेटा तो बात नहीं करता, एकलौता है फिर भी! ऐसा सब चित्रित करता है। अरे! हुआ नहीं है फिर किसलिए भाई...? इसे अग्रसोच कहते हैं। अग्रसोच यानी क्या? जो हुआ नहीं है उसके लिए ऐसा चित्रित करना। आपको अभी अग्रसोच है किसी प्रकार का? आराम से मज़े करते हैं न! अग्रसोच तो सभी समझदार लोगों को ही होता है न या पागलों को होता है?

प्रश्नकर्ता : समझदार कहलाने वालों को ही होती है।

दादाश्री : पागलों को नहीं होता, नहीं? खिड़कियाँ ही बंद! ऐसा दिखाई देता हो तो झ़ंझट होगी न!

अरे! साधु महाराज के मन में भी ऐसा होता है, ‘इस महाराज को पक्षाघात हुआ है और मेरा नाम भी उनकी राशि पर है, तो मुझे भी पक्षाघात हो जाएगा’, इस तरह अक्ल लगाता है। जैसे-जैसे अक्ल लगाता है वैसे-वैसे अंदर मज़ा आता है, नहीं? और यदि अक्ल नहीं लगाता तो हर्ज नहीं था! अतः फिर नींद नहीं आती बेचारे

को! तो पक्षाधात को बुलाया बेचारे ने, पक्षाधात उसके वहाँ सो रहा था, उसे यहाँ बुलाया!

यानी कि यह एक प्रकार का अग्रसोच उत्पन्न हो जाता है, भविष्य में क्या होगा उसके लिए ही सोचता रहता है। भविष्य में क्या होगा? इसीलिए पूरा पुरुषार्थ खत्म हो जाता है। वहाँ पर उलझता रहता है। यहाँ खाना-पीना नहीं खाता। वहाँ भविष्य में रहता है भाई। अरे छोड़ न, अभी वहाँ क्या कर रहा है?

प्रश्नकर्ता : ‘क्या होगा?’ उसके लिए जो विचार आते हैं उनका ही दुःख है। बाकी दुःख है ही कहाँ?

दादाश्री : दुःख नहीं है। इसीलिए तो हमने ‘व्यवस्थित’ कहा है। तभी तो आप उस दुःख में से मुक्त हुए न! ‘व्यवस्थित’ के आधार पर तो आप सभी दुःखों से, जो आने वाले हैं, उनसे मुक्त ही हो गए न!

आपके अहंकार और ममता दोनों चले गए हैं और तभी व्यक्ति चिंता रहित जीवन जी सकता है, अंदर आनंद है और बाहर उपाधि (परेशानी) है, बाहर चिंता है, अग्रसोच है। आपका अग्रसोच खत्म करने के लिए तो मैंने ‘व्यवस्थित’ कह दिया है कि भाई, अब अग्रसोच क्यों कर रहे हो? आपको ‘व्यवस्थित’ कह दिया है इसलिए सबकुछ उसमें आ गया। क्योंकि भविष्यकाल ‘व्यवस्थित’ के ताबे में है, सुबह उठे और अगली मिनट के बाद क्या होगा, वह ‘व्यवस्थित’ के ताबे में है!

इसलिए अपने सभी महात्मा चैन से बैठते हैं, देखो न! उन्हें समझा दिया है कि ‘व्यवस्थित’ है, इसलिए दखल ही नहीं है। आप ‘व्यवस्थित’ समझ गए और अनुभव में आ गया कि वास्तव

में ‘व्यवस्थित’ ही है। तो दुःख रहा कोई? ‘व्यवस्थित’ शक्ति की वजह से आप सभी को शांति है, उसकी वजह से तो सभी जगह शांति है।

(सूत्र-15)

वीतराग दृष्टि क्या देखती है? खुद के पास क्या है, वह देखती है। खुद को नेगेटिव नहीं, पॉजिटिव लेना है। जगत् में नेगेटिव तो है ही। खुद को पॉजिटिव रहना है परंतु नेगेटिव से उकताना नहीं है।

वीतराग तो कैसे उदाहरण देते थे! महावीर भगवान कैसे उदाहरण देते थे! महावीर भगवान ने उनके शिष्यों को सिखाया था कि आप बाहर जाते हो और लोग एकाध लकड़ी मारें तो आपको ऐसा समझना है कि सिर्फ लकड़ी ही मारी है न, हाथ तो नहीं तोड़ा न! इतनी तो बचत हुई! अर्थात् इसे ही लाभ मानना। कोई एक हाथ तोड़े तो, दूसरा तो नहीं तोड़ा न!

एक व्यक्ति कहता है, ‘साहब, मेरा एक हाथ कट गया’। तब कहते हैं, ‘अरे, लेकिन दूसरा है न’। तब वह कहता है, ‘परंतु एक तो कट गया न’! तब कहते हैं, ‘नहीं, दूसरा हाथ है, दो पैर हैं। तू तो बहुत सुखी है’। तो वह सुखी होकर वापस जाता है। वापस फिर दूसरा हाथ कट जाए तब कहता है, ‘साहब, दो हाथ कट गए’। तब कहते हैं, ‘दो पैर तो हैं न? दो पैर हैं, दो आँखें हैं’। आँखें चली जाए तब कहते हैं, ‘कान हैं, जीभ है’। वीतराग का ज्ञान कैसा है? क्या बचा अब मेरे पास? एक पैर कट जाए तब कहते हैं, ‘नहीं, अभी एक पैर तो है ही। भले ही दो हाथ नहीं हैं, एक पैर नहीं है, लेकिन एक पैर तो है ही। किसी की मदद से एक पैर से भी चलूँगा’। वे नुकसान को नहीं देखते। क्या बचा है मेरे पास,

उसे देखते हैं। इतने सालों बाद भी चंदुभाई की कितनी सारी पूँजी बची है! आँखे हैं, नाक है, कान हैं, हाथ-पैर अच्छे हैं, सब हैं। वीतराग हमेशा ऐसा ही देखते थे। वीतराग दृष्टि कैसा देखती है? मेरे पास क्या है, उसे देखती है। आपकी उम्र के लोगों को पक्षाधात होते नहीं देखा है? तो आपको कहना है कि, 'ओहोहो! चंदुभाई आपको तो कुछ भी नहीं हुआ, बेवजह क्यों डरते हो?' ऐसे उदाहरण देने पड़ते हैं।

लाभ-अलाभ भगवान ने दिखाया। तू रोना मत, हँस, आनंद कर। बात गलत नहीं है न? भगवान ने सम्यक् दृष्टि से देखा था। उससे नुकसान में भी फ़ायदा दिखता है। आपको नेगेटिव नहीं, पॉज़िटिव लेना है। जगत् में नेगेटिव तो है ही। आपको पॉज़िटिव रहना है परंतु नेगेटिव से उकताना नहीं है।

(सूत्र-16)

सबसे पहले तो इस दुनिया में से नेगेटिव खत्म करना है। नेगेटिव को नेगेटिव है, ऐसा पहचान कर फिर उसे खत्म करना है।

सबसे पहले तो इस दुनिया में से नेगेटिव खत्म करना है। नेगेटिव को नेगेटिव है, ऐसा पहचान कर फिर उसे खत्म करना है। फिर पॉज़िटिव में लास्ट नंबर को खत्म करना है। उसके बाद उसे लास्ट बट वन, लास्ट बट वन ऐसे करते-करते खत्म करना है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है, पॉज़िटिव को भी बाद में, अंत में सभी पॉलिंशिंग, तो पॉज़िटिव में भी उसी अनुसार करना है फिर खत्म होते-होते... नेगेटिव और पॉज़िटिव, दोनों खत्म होंगे उसके बाद ही, वर्ना पॉज़िटिव रहेगा। पहले नेगेटिव, फिर पॉज़िटिव खत्म करना है।

दादाश्री : लेकिन ऐसे एक-एक करके

न?

प्रश्नकर्ता : एक-एक करके, हाँ।

दादाश्री : अपने यहाँ सीढ़ी हो तो सभी सीढ़ियाँ चढ़ जाते हैं। तो फिर एक-एक करके चढ़ते हैं या सारे एक साथ? मतलब एक-एक करके चढ़ते हैं। इसलिए सबसे पहले यह नेगेटिव जाएगा। वह नेगेटिव भी फिर कन्डिशनली जाएगा। कैसा? कन्डिशनली।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कन्डिशनली क्या? नेगेटिव कन्डिशनली?

दादाश्री : आलू को अच्छा कहा था न, तभी मिलें हैं। बेकार कहा होता तब भी मिलते। उनके प्रति कुछ न कुछ राग-द्वेष करते हैं तभी वे चीज़ें मिलती हैं। अब मिल गई, तो यदि आप उसे अच्छा कहोगे तो फिर से मिलेगी। इसलिए सबसे पहले छूटने के लिए उसे खराब कहना पड़ेगा, कि अरे, आलू से गैस हो जाती है। यह कन्डिशन तो है न फिर! एकदम से यह सब नहीं छूटता। इसलिए यह सब छोड़ते जाना है। नया उत्पन्न नहीं होता, पुराना जो है उसका हिसाब बराबर कर देना है। पुराने का निकाल (निपटारा) कर देना है। नया नेगेटिव उत्पन्न नहीं होने देना है। पुराने नेगेटिव का निकाल कर देना है। समझ में आ रहा है न?

प्रश्नकर्ता : लेकिन इसमें ऐसा है न, दादा आपने जो कन्डिशन बतायी न, नेगेटिव छोड़ने के लिए कन्डिशन, वह क्या है? आलू गैस करते हैं ऐसी प्रतीति ठीक से बैठ जाए, फिर कभी भी आलू का नाम नहीं लेगा।

दादाश्री : हाँ। लेकिन एक बार उसे ऐसा

कहना पड़ेगा कि आलू वातकारक है। वातकारक कहना, वह नेगेटिव शब्द है लेकिन ऐसा बोलना पड़ेगा। निकाल तो करना ही पड़ेगा। नया उत्पन्न नहीं होने देना है। नये के लिए नेगेटिव का उपयोग नहीं करना है लेकिन जो पुराना हो चुका है, उसका निबेड़ा तो लाना ही पड़ेगा न?

(सूत्र-17)

हमेशा पॉज़िटिव बोलो। भीतर आत्मा है, आत्मा की हाजिरी है। इसलिए पॉज़िटिव बोलो। पॉज़िटिव में नेगेटिव नहीं बोलना चाहिए। पॉज़िटिव हुआ, उसमें नेगेटिव बोलें, वह गुनाह है और पॉज़िटिव में नेगेटिव बोलते हैं, इसलिए ये सारी मुश्किलें खड़ी होती हैं। ‘कुछ भी नहीं बिगड़ा है’, ऐसा बोलते ही भीतर कितने ही बदलाव हो जाते हैं। इसलिए पॉज़िटिव बोलो।

प्रश्नकर्ता : मेरे अंदर वेदना बहुत बढ़ गई है, तो ज्ञान में किस तरह रहना चाहिए?

दादाश्री : वह तो बढ़ेगी। जिसे कुछ भी वेदना होती है, वह ‘आप’ नहीं हो और ‘आप’ जो हैं, उसे वेदना नहीं हो सकती। किसी भी प्रकार की वेदना होती है, वह आपका विभाग नहीं है और आपके विभाग में वेदना नाम का गुण ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वह वेदना किसे होती है?

दादाश्री : चंदूभाई को, उस अहंकार को। जो अहंकार था न, वह भुगतता है। उस अहंकार वाले से आपको कहना है कि ‘चंदूभाई, बूढ़ापा आया है इसलिए वेदना ज़रा बढ़ गई है, ज़रा शांति रखिए। फिर भी उम्र के हिसाब से तो आपका शरीर अच्छा है’।

मिश्रचेतन है न, इसलिए ऐसा सब होता

है। यह मिश्रचेतन है। यह अहंकारी है, इसलिए आपको कहना है कि ‘चंदूभाई, बाकी सबका देखो तो सही! आपका तो बहुत अच्छा है, पुण्यशाली हो’। वर्ना भुगतने के सिवा और कोई चारा है ही नहीं न, शिकायत करने से ज्यादा बढ़ेगी क्या?

प्रश्नकर्ता : आपसे तो कह सकते हैं न?

दादाश्री : हाँ, कहने में हर्ज़ नहीं है। लेकिन वह आपसे चिपक जाती है इसलिए आपको ही ऐसा कहना है, कि ‘चंदूभाई, आपको कुछ खास नहीं हुआ है’। और अगर आपको मुझ से कहना हो न, तो आपको ऐसा कहना है कि ‘चंदूभाई को ऐसा होता है’। इस तरह से कहना चाहिए। ‘मुझे हुआ है’, ऐसा नहीं कहना चाहिए। जिस अहंकार ने किया था, वह अहंकार भुगत रहा है। आप आत्मा के तौर पर अलग हो गए हैं। जिसने किया वह भुगतेगा, आपको क्या लेना-देना? आत्मा को अलग कर दिया इसलिए व्यवहार अलग रखना पड़ेगा। ये बात समझनी है। बात समझ में आ गई तो अपने आप पक्की हो जाएगी। आप इस बात को समझ गए कि चंदूभाई आपके पड़ोसी हैं और यह जो अहंकार है, वही चंदूभाई है। कौन भुगतता है? तब कहते हैं, अहंकार।

अहंकार अलग है और आप अलग है। वह अहंकार भी मृत हो चुका है। उसमें से जीव भाग निकाल लिया है। जीव, आत्मा में आ गया है और निर्जीव (डिस्चार्ज) अहंकार बचा है। आप देह नहीं हो, मन नहीं हो, बुद्धि नहीं हो, चित्त नहीं हो। इनमें से कुछ भी आप नहीं हो। आपको कुछ लेना-देना नहीं है। बेवजह ही किसी और की चिठ्ठी ले लेते हैं, वह किस काम की? चिठ्ठी चंदूभाई की है और उसे आप आगे बढ़कर

ले लेते हो कि 'लाओ, मेरी है'। आपकी चिठ्ठी आए तब आपको लेनी है।

वास्तव में संयोग और शुद्धात्मा के सिवा दूसरा कुछ है ही नहीं। फिर संयोग भी दो प्रकार के हैं—प्रतिकूल और अनुकूल। उनमें, अनुकूल में कोई परेशानी नहीं आती, प्रतिकूल ही परेशान करते हैं। उतने ही संयोगों को हमें सँभाल लेना है, और फिर संयोग वियोगी स्वभाव के होते हैं। इसलिए उसका समय हो जाए तब चलता बनेगा। हम उसे 'बैठ-बैठ' कहें, फिर भी खड़ा नहीं रहेगा!

आपके भी अब सिर्फ संयोग ही बचे हैं। मीठे संयोगों का आपको उपयोग करना नहीं आता। मीठे संयोगों का आप वेदन करते हो, इसलिए कड़वों का भी वेदन करना पड़ता है। परंतु यदि मीठे को 'जानो', तो कड़वे में भी 'जानपना' रहेगा! लेकिन आपकी अभी पहले की आदतें जाती नहीं, इसलिए वेदन करने जाते हो। आत्मा वेदन करता ही नहीं, आत्मा जानता ही रहता है।

हमने तो ज्ञानियों के तरीके सीख लिए थे, तीर्थकरों के तरीके सीख लिए थे, कि दुःख को सुख मान लेना है। इसलिए जब दाढ़ दुःखती है तब हम जानते हैं कि, 'आज सुख है, अच्छा हुआ'! क्योंकि साइकोलॉजिक इफेक्ट ऐसा है कि आत्मा जैसी कल्पना करता है वैसा ही हो जाता है। 'मुझसे दर्द हुआ', ऐसा कहने से वैसा ही बरतता है। आप इतना कहो कि, 'चंदूभाई को दर्द हो रहा है', तो दिक्कत नहीं होगी! और यदि उसे दर्द हो रहा हो, तब ऐसा कहे कि, 'मेरे जैसा सुखी कोई नहीं है', तो वैसा ही हो जाएगा लेकिन यदि भाव नहीं टूटे तो! परंतु कुछ देर बाद भाव तोड़ देता है।

आपको आत्मा के तौर पर कहना है कि शरीर भले ही बीमार हो जाए! आत्मा तो हमेशा वैसे का वैसा ही रहता है। और आप आत्मा रूप हो गए हैं। एक बार आत्मा रूप हो जाने के बाद लक्ष निरंतर रहता है। कितने सारे पाप धुल जाते हैं तब जाकर वह चीज़ निरंतर रह पाती है! ये सारे पाप खत्म हो चुके हैं। भाप रूपी खत्म हो गए, पानी रूपी खत्म हो गए। बर्फ रूपी खत्म नहीं होते। सिर्फ, वे बर्फ रूपी बचे हैं, जो गाढ़ हैं। अतः उन्हें भुगतना ही पड़ता है! उन्हें तो, मुझे भी भुगतना ही पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी को भी शारीरिक दुःख भुगतना पड़ता है?

दादाश्री : ज्ञानी को ही भुगतना पड़ता है। बाकी लोग तो इन्जेक्शन व दवाईयाँ लेकर दर्द को कम कर देते हैं, उसके लिए ओवरड्राफ्ट लेते हैं। हम ओवरड्राफ्ट नहीं लेते, निकाल कर देते हैं। कृपालुदेव को बेहिसाब दुःख था। लघुराज स्वामी को सालों से शौच में खून आता था। भगवान महावीर को भी बेहिसाब दुःख आए थे। इसीलिए तो वे महावीर कहलाए।

विचार ऐसा आना चाहिए कि ये ज्ञानी शारीरिक वेदना का किस प्रकार से निकाल करते हैं!

(सूत्र-18)

'मुझसे नहीं होता, ऐसा नहीं होता, करना है लेकिन नहीं होता।' अरे, आपको किसने सिखाया? मत बोलना ऐसी बातें!

यों तो पुस्तकों में सारा व्यवहार ही बताया है न! 'ऐसा करो, वैसा करो, दया रखो, शांति रखो, समता रखो।' उसके अलावा और करेंगे भी क्या? और उसमें फिर खुद की सत्ता में कुछ भी

नहीं है। आपकी सत्ता में कुछ नहीं हो और नया कहे कि 'यह करो, यह करो' उसका अर्थ क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : घोटाला हो जाता है।

दादाश्री : घोटाला ही हो गया है न! लोग समझते हैं कि, 'यह तो हम से होता ही नहीं है'। ऐसा फिर वापस मान लेते हैं। घोटाला होता हो, वह तो अच्छा है, लेकिन 'नहीं होता' ऐसा मान लेता है। इसलिए वह न्यूटूल होता जाता है। 'मुझसे नहीं होता, ऐसे नहीं होता, करना है लेकिन नहीं होता।' अरे, आपको किसने सिखाया? मत बोलना ऐसी बातें! क्या ऐसा बोलते हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, बोलते हैं।

दादाश्री : 'करना है लेकिन होता नहीं' यदि उदय टेढ़े आएँ हों तब क्या करे? भगवान ने तो ऐसा कहा था कि 'उदय स्वरूप में रहकर, उसे जानो'। 'करने के लिए' नहीं कहा था, 'उसे जानो' इतना ही कहा था। उसके बदले, कहते हैं 'यह किया लेकिन होता नहीं। करते हैं लेकिन होता नहीं, बहुत इच्छा है लेकिन होता नहीं'। अरे, लेकिन बेकार ही बिना बात के उसे क्यों गाए जा रहा है। 'मुझसे नहीं होता, नहीं होता' ऐसा चिंतवन करने से आत्मा कैसा हो जाता है? पत्थर हो जाता है। और ये तो क्रिया ही करने जाते हैं और साथ में 'नहीं होता, नहीं होता, नहीं होता', बोलते हैं। ऐसा कितने लोग बोलते होंगे?

प्रश्नकर्ता : सभी ही, लगभग सभी।

दादाश्री : वे जो 'नहीं होता' करते हैं, यानी जैसा सोचो आत्मा वैसा हो जाता है। अतः 'नहीं होता, नहीं होता, नहीं होता' कहने से फिर जड़ जैसे हो जाते हैं। ऐसा बोल-बोलकर तो

उन्हें जड़ जैसा होना पड़ेगा। लेकिन उन्हें इस ज़िम्मेदारी का पता नहीं है इसलिए बेचारे बोलते हैं। मैं मना करता हूँ कि नहीं बोलना चाहिए, अरे, 'नहीं होता' ऐसा तो कहना ही नहीं चाहिए। आप तो अनंत शक्ति वाले हैं, हम जब ऐसा समझते हैं तब तो ऐसा बोलते हैं, 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ'। वर्ना अब तक तो ऐसा ही बोलते थे 'नहीं होता'!

लोग फिर क्या कहते हैं? 'जानते हैं ज़रूर लेकिन कुछ होता नहीं।' 'होता नहीं' यानी क्या होगा उसका? उसने क्या कहा?

प्रश्नकर्ता : कुछ होता नहीं।

दादाश्री : यह 'कुछ होता नहीं', यह सब से बड़ी जोखिमदारी है। कौन सी जोखिमदारी? तब कहते हैं, भ्रांति में भी अंदर आत्मा होने से, जैसा बोलते हैं, वैसा हो जाता है, जैसा चिंतन करते हैं, वैसे हो जाते हैं। यानी 'कुछ होता नहीं, कुछ होता नहीं', बोलने से जानवर का जन्म या तो पत्थर का जन्म मिलता है। जो कुछ भी नहीं कर पाते हैं, ऐसा। अर्थात् मालूम नहीं हैं, इन ज़िम्मेदारियों के बारे में। 'कुछ नहीं होता है' ऐसा लोग कहते हैं, क्या वह सुनने में आया है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : ऐसा नहीं बोलना चाहिए। 'कुछ नहीं होता' ऐसा नहीं है। करना ही नहीं है, भाई। यदि संडास जाना भी परस्ता के हाथ में है तो करने का आपके हाथ में कैसे हो सकता है? कोई मनुष्य ऐसा जन्मा नहीं है कि जिसके हाथ में ज़रा भी करने की सत्ता हो। आपको जानना है और निश्चय करना है। इतना ही करना है आपको। यह बात समझ में आ जाए तो काम निकल (हो) जाएगा।

(सूत्र-19)

ये सब संकुचित माइन्ड हैं, कि 'इतना मुझसे होगा और इतना नहीं होगा'। ओपन माइन्ड यानी नेगेटिव वह नेगेटिव और पॉज़िटिव वह पॉज़िटिव, दोनों को समझता है और पॉज़िटिव में रहना है, इससे नेगेटिव नहीं आता। संकुचित माइन्ड यानी नेगेटिव में रहना है। तो फिर पॉज़िटिव नहीं आता।

जितना माइन्ड ओपन (खुला मन) रखें उतना समझ में आया कहा जाएगा। जितना ओपन माइन्ड होता है उतनी समझ कही जाती है। कम समझ वाला संकुचित होता जाता है। जिसका माइन्ड संकुचित है वह कहता है कि 'मैं समझता हूँ परंतु वह व्यक्ति कुछ भी नहीं समझता'। पर जिनका ओपन माइन्ड होता है न, उनको समझ में आया कहा जाएगा।

जितना ओपन माइन्ड होगा न, उतनी उत्तम वह चीज़ कही जाएगी। आपको माइन्ड कहाँ है, वह समझ लेना चाहिए। आपको ठोकर न लगे और आपका माइन्ड ओपन रहे, तो समझ जाना कि कैसा ओपन माइन्ड रखा है! यह मैं तुझे क्यों बता रहा हूँ? अभी मन ऐसा संकुचित हो गया है। भविष्य में तुम्हारा ऐसा संकुचित रहा तो सब बंद हो जाएगा। फिर कोई भीतर अच्छी चीज़ डालना चाहे तो भी अंदर जाए तो न? इसलिए माइन्ड ओपन कर देना। फिर भी वह ओपन नहीं रहेगा। वापस अंदर वाले क्या करेंगे?

प्रश्नकर्ता : उछलेंगे।

दादाश्री : अंदर वाले तुझे कहेंगे कि 'क्या सुनने जैसा है?' तब तू ऐसा कहना, 'यहाँ चूप बैठो'। अंदर वाले तेरे से अलग हैं। वे सभी 'क'

वाले हैं। क्या-क्या नाम हैं उन 'क' वालों का? अंदर क्रोधक है वह आपसे क्रोध करवाता है, लोभक है वह लोभ करवाता है, चेतक है वह चेतावनी देता है। भावक है, ये आपसे भाव करवाते हैं। अंदर हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : हैं न, हर एक में होते ही हैं।

दादाश्री : वे सभी होते ही हैं। इसलिए उन सभी से सावधान रहना है। उनको निकालते-निकालते तो मेरा दम निकल गया था। कितना समय बीतने के बाद निकले थे। वे उपवंशीय हैं। वह माल अपनी वंशावली का नहीं है। बाहर से आकर घुस गए हैं। लोग जानते तक नहीं हैं कि हमारे अंदर से कौन बोल रहा है! हमें कार्य करना हो और अंदर से किसी और ही प्रकार की सलाह मिले तो क्या हमें समझ में नहीं आता कि यह कोई तीसरा ही है? ऐसा होता है क्या? ऐसा तुझे अनुभव हुआ है?

प्रश्नकर्ता : होता ही है न!

दादाश्री : अंदर वह तीसरी जाति है। इसलिए तुझे सावधान किया। मैंने देखा तुम्हारा मन बहुत संकुचित है। ऐसा संकुचित नहीं रखते। वर्ना, इतनी बड़ी फिलॉसोफी कैसे निकलती? माइन्ड ओपन रखना है। एक बार तो हर किसी की सुन लेना। सुनने के बाद यदि आपको ठीक न लगे तो निकाल देना। और जो बातें ठीक लगी हों उनमें बहुत गहराई में मत जाना। आपको जिसके पाँच वाक्य पसंद आए हों न, तो छठा वाक्य अंदर लिख लेना है। उतना थोड़ा-बहुत विश्वास तो रखना पड़ेगा या नहीं रखना पड़ेगा?

अभी पंद्रह दिन पहले कहीं कोई स्टीमर डूब गया हो और व्यापार के लिए आज आपको

वहाँ पर जाना पड़े, तो स्टीमर में बैठते समय आज आपके अंदर क्या होगा? घबराहट हो जाएगी, क्यों? अंदर से आवाज आएगी कि 'यदि यह डूब गया तो?'

प्रश्नकर्ता : वैसे तो हम किसी के बारे में अभिप्राय नहीं दे सकते लेकिन यदि ओपन माइन्ड रहा तो अभिप्राय दे सकते हैं, ऐसा आपने बताया। तो यह ओपन माइन्ड मतलब आप क्या कहना चाहते हैं?

दादाश्री : ये सब संकुचित माइन्ड हैं, कि 'इतना मुझसे होगा और इतना नहीं होगा'। ओपन माइन्ड यानी नेगेटिव, वह नेगेटिव और पॉजिटिव वह पॉजिटिव, दोनों को समझता है और पॉजिटिव में रहना है, इससे नेगेटिव नहीं आता। संकुचित माइन्ड यानी नेगेटिव में रहना है। तो फिर पॉजिटिव नहीं आता। ओपन माइन्ड वाले तो कम ही लोग होते हैं न! आप चाहे किसी भी धर्म की बातें करें तो उसके मन में कुछ भी असर न हों तब वह ओपन माइन्ड कहलाएगा, वर्णा संकुचितता।

मन शंका वाला है न! इसलिए वह उल्टा दिखाई देता है। मन यदि शंका वाला हो तो पहले शुद्ध करना पड़ता है। यह सच्ची बात लोगों तक पहुँच नहीं पाती।

(सूत्र-20)

नेगेटिव थिंकिंग करना ही नहीं चाहिए। नेगेटिव वाणी, नेगेटिव थिंकिंग नेगेटिव कुछ भी नहीं होना चाहिए। बी पॉजिटिव।

प्रश्नकर्ता : दादा, ओपिनियन (अभिप्राय) बंद क्यों नहीं होता?

दादाश्री : वह तो, यदि आपको बंद करना ही हो तो बंद हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : प्रयत्न जारी हैं, दादा।

दादाश्री : नहीं, नहीं, मज्जबूत प्रयत्न होने चाहिए। कहना कि बस, अब मुझे ओपिनियन देना ही नहीं है। फिर यदि कढ़ी खारी हो जाए तो हम कुछ नहीं बोलते, ओपिनियन नहीं देते। ओपिनियन दिया कि बंध गए। फिर मन का जन्म होता है। ओपिनियन इज्ज द फादर ऑफ माइन्ड एन्ड लैंग्वेज इज्ज द मदर ऑफ माइन्ड। कढ़ी खारी बनी, ऐसा बोलने की भी क्या ज़रूरत है? एक तरफ रख दो, भाई। अच्छी बनी है, ऐसा बोलने की भी ज़रूरत नहीं है, यदि तुझे मुक्ति चाहिए तो। अच्छी बनी हो तो आराम से खाना। दो-दो कटोरी भरकर खा लेना, उसका हर्ज नहीं है। और अच्छी नहीं बनी हो तो मत खाना। लेकिन ओपिनियन मत देना।

प्रश्नकर्ता : परंतु बहुत ही कठिन है, दादा।

दादाश्री : नहीं, ज़रा भी कठिन नहीं है। ऐसा उल्टा बोलने से फिर कठिन हो जाता है। आत्मा की शक्ति के सामने क्या बाकी रहेगा? सबसे पहले जब वह (नेगेटिव) जोर करे, तब उसकी गलत बात न माने, उस पर ज्यादा ध्यान न दें, तो उसका जोर टूट जाएगा और आपका आगे बढ़ेगा।

अपने लिए या किसी और के लिए खराब विचार आया, एक भी नेगेटिव विचार बहुत नुकसानदायक है। नेगेटिव थिंकिंग करना ही नहीं चाहिए। नेगेटिव वाणी, नेगेटिव थिंकिंग, नेगेटिव कुछ भी नहीं होना चाहिए। बी पॉजिटिव।

आपका निश्चय होना चाहिए। आपका निश्चय टूटना नहीं चाहिए। फिर पूर्व कर्म एकदम खराब हों, तब भी थोड़ा धीरे-धीरे लोकिन वह उसी तरफ जाता है, ऐसा नियम है। आपके निश्चय पर

आधारित है। आप अनिश्चित बोलोगे तो फिर अनिश्चित हो जाएगा। अब मुझसे नहीं होगा, तो वैसा हो जाता है। चाहे कुछ भी हो तब भी मैं करूँगा, ऐसा कहना है। निश्चय करने के बावजूद भी कमज़ोर पड़ जाए तो बार-बार निश्चय करना चाहिए। लेकिन, ‘मुझसे यह नहीं होता’, वह ‘नहीं होता’, ऐसा बोलना ही नहीं चाहिए। ऐसा बोलने से तो आत्मा (प्रतिष्ठित आत्मा) छिन्न-भिन्न हो जाता है।

(सूत्र-21)

अक्रम विज्ञान का कितना बड़ा आश्र्य है कि व्यक्ति को पॉज़िटिव साइड (सकारात्मक दिशा) में बैठा देता है!

ये तो अलौकिक विज्ञान है। ये कोई धर्म नहीं है, विज्ञान है। तुरन्त ही फल देने वाला है। इसलिए कहते हैं कि अब काम निकाल लो। अक्रम विज्ञान का कितना बड़ा आश्र्य है कि व्यक्ति को पॉज़िटिव साइड (सकारात्मक दिशा) में बैठा देता है! पॉज़िटिव साइड में आते-आते तो मनुष्य के करोड़ों जन्म बीत जाते हैं। इस नेगेटिव को धीरे-धीरे निकालते, निकालते, निकालते, कब अंत आएगा!

प्रश्नकर्ता : जितना समय नेगेटिव को भरने में लगा है, उतना ही समय लगेगा।

दादाश्री : इतना सारा समय, बस उसमें ही चला जाता है। और दोस्त भी नेगेटिव वाले मिल जाते हैं। रिश्तेदार, दोस्त, सभी उल्टे, सभी संयोग नेगेटिव वाले हैं।

प्रश्नकर्ता : सारा नेगेटिव में।

दादाश्री : वह सारा नेगेटिव पोर्सन (नकारात्मक भाग) ही खत्म हो गया। ये कोई

ऐसी-वैसी चीज़ है! जब तक देहाध्यास हो, तब तक नेगेटिव साइड ही होती है। अब नेगेटिवपना सब चला गया। एक व्यक्ति के लिए जरा-सा खराब विचार आना, वह भी नेगेटिव है। कोई आपको गाली दे रहा हो, उसके लिए खराब विचार आए, तब भी नेगेटिव कहा जाएगा। वह भी फिर उस व्यक्ति तक नहीं पहुँचता, खुद भगवान तक पहुँचता है। उसके अंदर भी भगवान तो हैं ही न! इतनी सारी जिम्मेदारियाँ मोल लेता है। इसलिए कहते हैं कि यह (विज्ञान) हाथ में आ गया है तो पूर्ण ही कर लो और काम निकाल लो। चाय पीते हैं, उसमें हर्ज नहीं है। स्टेशन पर पकोड़े खाते हो उसमें भी हर्ज नहीं है, किन्तु इतना ध्यान में, लक्ष (जागृति) में रखना कि ये जो सामान है वह पूरी तरह से काम निकाल लेने के लिए है। और फिर इसका आपको अनुभव भी हो चुका है कि यह नेगेटिव में नहीं जाता। ‘हम’ ‘नेगेटिव’ को ‘पॉज़िटिव’ से जीतते हैं। हम सबकी तो साइड पॉज़िटिव ही होनी चाहिए न? नेगेटिव हम कैसे देख सकते हैं?

(सूत्र-22)

पॉज़िटिव यानी क्या? कुछ निकालना नहीं है, कुछ हटाना नहीं है, केवल लाना है।

पॉज़िटिव यानी क्या? कुछ निकालना नहीं है, कुछ हटाना नहीं है, केवल लाना है।

तेल का एक पीपा भरा हो और कोई कहे कि तेल खाली कर दीजिए। तब आप पूछें कि अंदर क्या भरना है? तब वह कहें कि, पानी। तब आप उससे कहें कि भीतर पानी भरो, तेल अपने आप खाली हो जाएगा। या तो भीतर गेहूँ डालने हों या जो कुछ भी डालना हो, वह डालना शुरू करो तो सारा तेल निकल जाएगा। अरे, खाली

करो और भरो, उसके बजाय भीतर डालना शुरू करो न! उससे ये सब निकल जाएगा। ये गेहूँ और पानी, वे तो बुद्धि के खेल से दिखाई देते हैं। लेकिन वहाँ उसका हल कैसे लाना है कि भीतर यह पॉजिटिव डालोगे तो वह नेगेटिव अपनी जगह छोड़कर बाहर निकल जाएगा। यानी जो जगह छोड़कर अपने आप निकल जाता है, उसे ये लोग निकालते रहते हैं, खाली करते रहते हैं। अज्ञान को खाली करें तो कब अंत आएगा? अज्ञान को इस प्याले से खाली करते रहेंगे तो उजाला कब होगा? सुबह होगी? उसके बजाय उजाला कर ले न!

(सूत्र-23)

खुद रियल में आ जाए तभी व्यवहार में पॉजिटिव में आएगा।

अभी तो अंदर तरह-तरह की आँधियाँ आए तो वहाँ भी स्थिरतापूर्वक हल निकालना! आँधियाँ कैसी-कैसी आएँगी? पूर्व कर्म की। मतलब भरा हुआ माल है। पूरण हुआ था, उसका गलन होते समय आँधी आती है। उस समय आपको स्थिरता रखनी चाहिए कि आँधी आई है। आप शुद्धात्मा, आपको होम डिपार्टमेन्ट में बैठकर देखते रहना है।

क्योंकि आप में आत्मा अलग बरतता है, हंड्रेड परसेन्ट और पुद्गल अलग बरतता है और शुद्धात्मा दशा दी हुई है।

सिर्फ तीर्थकरों ने ही रिलेटिव और रियल, दोनों के बीच लाइन ऑफ डिमार्केशन डाली है। अन्य किसी ने नहीं डाली। कुंदकुंदाचार्य ने डाली थी, वह भी सीमंधर स्वामी के संधान से। अपना यह रियल है इसलिए, रिलेटिव और रियल दोनों के बीच डिमार्केशन लाइन डाली है! वहाँ से ही

फिर वह नित्य हो गया। डिमार्केशन लाइन, बहुत अच्छी डल गई है! उसी की कीमत है न!

रियल समझेगा तब रिलेटिव समझेगा या फिर पूरे रिलेटिव को समझ लेगा तो रियल समझेगा। जैसे कि यदि सिर्फ गेहूँ-गेहूँ समझ सके तो फिर रहा क्या? कंकड़। सिर्फ कंकड़ को समझ ले तो क्या रहा? गेहूँ। गेहूँ व कंकड़ दोनों साथ में हैं, ऐसा पता चल जाता है न?

पॉजिटिवपन (सकारात्मकता) बढ़ जाए तो बहुत हो गया। परंतु पॉजिटिवपन यों ही बढ़ सकें, ऐसा नहीं है। खुद प्रयत्न करने जाता है तो पॉजिटिव और नेगेटिव, दोनों उत्पन्न हो जाते हैं। क्योंकि खुद को पता नहीं है कि कैसे उत्पन्न कर सकते हैं। वह तो जब खुद रियल में आता है तभी व्यवहार में पॉजिटिव में आता है।

चंदू यदि पॉजिटिव में रहे तो 'खुद' रियल में रह सकता है।

वह 'पॉजिटिव' पुरुषार्थ है, उससे ऊर्ध्वगति होती है। उल्टा भाव करना, वह 'नेगेटिव' पुरुषार्थ है। उससे अधोगति में जाता है और यथार्थ पुरुषार्थ तो, 'खुद' पुरुष होकर (पुरुषार्थ) करे तो मोक्ष में जाता है!

(सूत्र-24)

'ज्ञानी पुरुष' मिल जाए तो मोक्ष होता है, वर्ना करोड़ो उपाय करने पर भी मोक्ष नहीं होता। उपाय से मोक्ष नहीं होता, उपेय से मोक्ष होता है। यदि 'हमारी' एक ही आज्ञा का संपूर्ण रूप से पालन करें न, तो एकावतारी हो सके ऐसा है! फिर जैसी जिसकी समझ। गलत समझ दूर हो जाए और सही समझ प्राप्त हो जाए, वही आनंद है। किन्तु अबुध होकर काम निकाल ले, तो।

प्रश्नकर्ता : कभी मोक्ष में जाने की बहुत ही जल्दबाज़ी रहती है।

दादाश्री : यदि जल्दबाज़ी करेगे तो ठोकर खाओगे। मोक्ष मिलने के बाद में मोक्ष की क्या जल्दी? जल्दी किसलिए? कोई आपका रिजर्वेशन ले लेगा क्या? रिजर्वेशन को कोई भी नहीं छू सकता! जिस जगह जाना हो उसका निश्चय, उसकी टिकिट, सबकुछ हो चुका है! किसी से पूछ लेना कि गाड़ी कैसी है? तब कहेंगे, 'स्पीडी'। तो उसमें बैठने के बाद सो जाना है।

अब आप जहाँ भी सोएँगे, वहाँ आनंद। ठंड में छत पर सोना पड़े तब वहाँ भी आनंद। आप अपनी तरह से अंदर शुद्धात्मा की गुफा में घुस जाओ न, आपके पास शुद्धात्मा का स्ट्रोंग रूम है, कोई नाम ही नहीं ले सकता वहाँ, ऐसा स्ट्रोंग रूम है यह तो। अपने होम डिपार्टमेन्ट में घुस जाना, यह सारा तो फैरैन है। तो फैरैन में भले ही शोर शराबा हो, आप होम के स्ट्रोंग रूम में घुस गए तो फिर कोई नाम लेने वाला होगा ही नहीं। अब अनुभव होगा न!

इस ज्ञान से तो आपकी दूज हो गई है। अब जैसे-जैसे आज्ञा में रहेंगे, वैसे-वैसे फिर पूनम होंगी।

प्रश्नकर्ता : पूनम करने की उत्कंठा तो होनी चाहिए न, कि जल्दी से हो?

दादाश्री : जल्दी की बात नहीं है। आपको आज्ञा पालन करते रहना है, बस। आप अधिक आज्ञा पालन करो, उसी के परिणाम स्वरूप पूनम आएंगी। जो पद सामने से आए, उसकी उत्कंठा कैसी? मोक्ष भी सामने आ रहा है और सबकुछ सामने आ रहा है। हमें तो अपने आप, दादा जो कहते हैं उस अनुसार कार्य करते जाना है, बस।

अच्युत किसी झंझट में नहीं पड़ना है। आगे जाने लगेंगे तो फिर बोझ बढ़ जाएगा। भला फिर उसका बोझ कौन लेगा, बिना बात के?

प्रश्नकर्ता : क्यों दादा, उसके लिए तीव्रता नहीं होनी चाहिए?

दादाश्री : नहीं, तीव्रता तो इन पाँच आज्ञा में रहने के लिए ही रखनी है। वह जो कार्य है, उसके लिए नहीं रखनी है। कारण के लिए तीव्रता रखनी है, कार्य तो फल है। फल के लिए तीव्रता रखकर, लोग कारण में कमज़ोर रह गए हैं। कार्य बड़ा है या कारण?

प्रश्नकर्ता : कारण बड़ा है, दादा। लेकिन लक्ष के लिए तीव्रता के बारे में बताइए।

दादाश्री : वह तो रहेगी ही। वह तो कम होगी ही नहीं। हम जब यहाँ घर से रास्ते पर जाते हैं न, तो सीढ़ियाँ उतरकर ही नीचे जाना है, उस बात को याद रखने की ज़रूरत नहीं है। हमें सिर्फ अगली सीढ़ी देख-देखकर चलना है ताकि गिर न जाएँ, बाकी पहुँचेंगे तो नीचे ही।

प्रश्नकर्ता : इस जन्म में तो मोक्ष मिलेगा नहीं तो मोक्ष के लिए कितने जन्म लेने पड़ेंगे?

दादाश्री : वह तो, जितना आज्ञा का पालन करेगा, यदि सत्तर प्रतिशत पालन करेगा तो वह एक ही जन्म में मोक्ष में चला जाएगा। ज्यादा से ज्यादा चार और कम से कम एक। लेकिन फिर यदि कोई ज़रा सी भी आज्ञा का पालन नहीं करे तो डेढ़ सौ भी हो सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं न, कि ज्ञान लेने के बाद में किसी को कर्म चार्ज ही नहीं होते हैं, सब डिस्चार्ज ही होता रहता है। तो सब एक ही जन्म में मोक्ष में जाने चाहिए न?

दादाश्री : जितना हमारी इन आज्ञाओं का पालन करता है न, उतना कर्त्ताभाव रहता है। अतः उसे लेकर एक या दो जन्म होंगे। जिस प्रकार से आज्ञा का पालन करेगा, उस आधार पर एकाध जन्म कम या ज्यादा हो सकता है। ज्यादा से ज्यादा तीन-चार लगेंगे लेकिन फिर भी जो व्यक्ति बहुत ध्यान न रखे, मेरे बहुत परिचय में न आए तो बहुत हुआ तो उसके पंद्रह जन्म होंगे। किसी के सौ-दो सौ भी हो सकते हैं लेकिन कुछ तो लाभ होगा, उसे। जो मुझसे मिला है न, जो यहाँ चरण स्पर्श कर गया है उसे लाभ हुए बगैर रहेगा नहीं। जन्म बहुत कम हो जाएँगे। लेकिन मुझसे जितना अधिक मिले और सब खुलासे कर ले... मैं ऐसा नहीं कहता कि पूरे दिन पड़ा रहे। पाँच मिनट आकर खुलासा कर जा तू। तुझे क्या तकलीफ रहती है? भूलचूक हो जाती हो तो हम तुझे दूसरी चाबियाँ दे देंगे और भूलचूक सुधार लेंगे। क्योंकि एक घंटे की ज्ञानविधि से फंडामेन्टल (आधारभूत वस्तु) प्राप्त होता है। उसके बाद विस्तारपूर्वक जान लेना चाहिए न! यदि डॉक्टर बनना हो, तो उसमें भी टाइम तो लगाते हो न? कॉलेज में पढ़ते हुए पच्चीस-पच्चीस साल का टाइम बिता देते हैं। तो इसके लिए कुछ तो क्वॉलिफिकेशन (योग्यता) चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : तो दादा, क्या ऐसा होता है कि मोक्ष मिलने में विलंब होगा? दो जन्म के बदले चार जन्म हो जाएँगे? क्या ऐसा हो सकता है?

दादाश्री : ऐसा होता है, तब भी हर्ज क्या है?

प्रश्नकर्ता : लेकिन जल्दी जाना है। बीच में कहीं फँस जाएँ तो?

दादाश्री : एक संतपुरुष से नारद ने कहा था... उसने पूछा 'नारद जी, पूछ आए भगवान से कि मेरा मोक्ष होगा?' तब नारद जी ने बताया, 'हाँ, भगवान ने कहा है कि मोक्ष होगा। यह जो इस इमली के पेड़ के नीचे बैठे हो, उसके जितने पत्ते हैं उतने जन्म लगेंगे और उसके बाद आपका मोक्ष हो जाएगा'! 'होगा ज़रूर, कहा है न, इतना बहुत हो गया।' तो फिर मोक्ष हो जाएगा, उस आनंद में बहुत नाचे, खूब नाचे। तो महत्व इस बात का है कि मोक्ष होगा ही। कब होगा, वह बाद में देख लेंगे।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि सीढ़ियाँ उतर जाएँगे तो और अधिक जन्म लग जाएँगे न?

दादाश्री : 'दादा, दादा' करते हुए आगे चलते जाना। किसी बात का भय नहीं रखना है कि ऐसा हो जाएगा तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : हर एक जन्म में मोक्ष का लक्ष तो रहेगा ही न?

दादाश्री : अब बहुत कहाँ होने हैं? लक्ष तो साथ में रहेगा ही न! मोक्ष स्वरूप ही रहना है।

(सूत्र-25)

पूरा जगत् 'नेगेटिव' में भटक-भटक कर मर गया। यह 'अक्रम' तो बढ़िया 'पॉज़िटिव' मार्ग है। यदि तुझे पॉज़िटिव करना है, तो बिजली चमके उस समय वह मोती पिरो लेना, ऐसा करते-करते माला पूरी हो जाएगी।

यानी यह 'अक्रम विज्ञान' बहुत अच्छा है न! इन 'दादा' के कहे अनुसार चलेंगे न, तो इस पूरी भट्ठी से छूट जाएँगे, भीतर से नाटकीय रहना है हमें और फिर इन लोगों के साथ व्यवहार

का हल आएगा। पूरे व्यवहार का हल नहीं लाएँगे तो ये लाल झंडी दिखाएँगे। यहाँ तो कोई लाल झंडी दिखाता ही नहीं है न! यह रास्ता ही किलअर रास्ता है, यह ‘विज्ञान’ ही अलग प्रकार का है।

अच्छा और खराब दो भाग हैं इस दुनिया में, पॉज़िटिव और नेगेटिव। तो नेगेटिव वाले नेगेटिव करते ही रहते हैं लेकिन पॉज़िटिव वाले नहीं करते। वे जो नेगेटिव वाले हैं, वे अँधेरा ही ढूँढते हैं। पॉज़िटिव वाले प्रकाश (उजाला) ढूँढते हैं। प्रकाश हो जाए तो वह अँधेरे को खत्म कर देता है।

देखो, इस पॉज़िटिव के लिए शास्त्रकारों ने क्या कहा है? यदि तुझे पॉज़िटिव करना है, तो बिजली चमके उस समय वह मोती पिरो लेना, ऐसा करते-करते माला पूरी हो जाएगी। वह चमक हमेशा रहेगी या नहीं रहेगी उसका कोई भरोसा नहीं है।

पूरा संसार ‘नेगेटिव’ में भटक-भटक कर मर गया। यह ‘अक्रम’ तो बढ़िया ‘पॉज़िटिव’ मार्ग है। अपने यहाँ नेगेटिव बातें नहीं होती, सारी पॉज़िटिव बातें होती हैं। नेगेटिव तो संसारी बातें हैं, वे उलझा देती हैं और सुख नहीं आने देती। आत्मा पॉज़िटिव है और बुद्धि नेगेटिव है। बुद्धि विचार करवाती है, ‘ऐसा नहीं होने देता और वैसा नहीं होने देता’। अरे, ‘नहीं होने देता’, उसे नहीं देखना है, ‘क्या होने देता है’, उसे देखना है। तो भीतर बहुत प्रकार से, चारों तरफ से मदद मिलती रहेगी। बुद्धि तो आपका टाइम बरबाद करती है और आपमें आनंद उत्पन्न नहीं होने देती। और ‘मेरा कुछ भी अधूरा नहीं है’, ऐसा बोलना है, ‘धन्य है यह दिन’! श्रीमद् राजचंद्र ने एक ‘समकित

प्रकाशमान हुआ’, उसमें वे कहते हैं, ‘धन्य रे दिवस यह अहो’!

पॉज़िटिव ले, उसमें तो कोई हर्ज़ ही नहीं है। पॉज़िटिव लीजिए, मेरा सब पॉज़िटिव ही होता है न! हम सारा दिन बोलते रहते हैं, फिर चाहे कितनी भी टेप (वाणी) निकले, लेकिन पॉज़िटिव! हम सारा दिन बोलते ही रहते हैं, लेकिन कुछ भी नेगेटिव नहीं। नेगेटिव विचार नहीं, नेगेटिव वर्तन नहीं। फिर अपना यह विज्ञान कैसा है? अपनी यह जो टेप होती है न, उसका निकाल हो रहा है। इसलिए, अपना यह अलग ही प्रकार का है, निकाली बाबत के तौर पर। सारे जगत् के लिए बार-बार वह उदय में आएगा और आपका यह निकाल हो जाएगा। क्योंकि आप उसे कर्ता के रूप में नहीं करते हैं। कर्ता होने से कर्म बंधता है। यानी सारे जगत् के लिए तो बहुत जोखिमदारी है।

अब हमें ‘दादा’ के ज्ञान को तो रोशन करने का प्रयत्न करना है और फिर भी रोशन नहीं हुआ, तो ठीक है। उसका कोई तंत थोड़े ही पकड़ना है? हमारे प्रयत्न पॉज़िटिव होने चाहिए।

कई साल गुज़र गए, किंतु मेरा मन ज़रा सा भी नेगेटिव नहीं हुआ है। किसी भी संयोग में ज़रा सा भी नेगेटिव नहीं हुआ है। यदि लोगों का मन पॉज़िटिव हो जाए तो वे भगवान ही हो जाएँ! इसलिए मैं लोगों से क्या कहता हूँ कि इस नेगेटिवपना (नकारात्मकता) को छोड़ते जाइए, सम्भाव से निपटारा करके। फिर पॉज़िटिव तो अपने आप रहेगा। व्यवहार में पॉज़िटिव और निश्चय में पॉज़िटिव भी नहीं और नेगेटिव भी नहीं।

जय सच्चिदानन्द

आत्मज्ञानी पूज्य नीरुमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

मध्यप्रदेश

ग्वालियर दिनांक : 24 मार्च संपर्क : 9926265406

उत्तरखण्ड

काशीपुर दिनांक : 25 मार्च संपर्क : 9457635398

हल्द्वानी दिनांक : 26 मार्च संपर्क : 8273593855

हल्द्वानी दिनांक : 27 मार्च संपर्क : 8273593855

देहरादून दिनांक : 28 मार्च संपर्क : 9012279556

हरिद्वार दिनांक : 29 मार्च संपर्क : 9719415074

उत्तरप्रदेश

झाँसी दिनांक : 23 मार्च संपर्क : 9415588788

आगरा दिनांक : 25-26 मार्च संपर्क : 9258744087

कानपुर दिनांक : 27 मार्च संपर्क : 9452525981

गोरखपुर दिनांक : 28 मार्च संपर्क : 9935949099

सिद्धार्थनगर दिनांक : 31 मार्च संपर्क : 6392838433

वाराणसी दिनांक : 1-2 अप्रैल संपर्क : 9795228541

बदलापुर दिनांक : 3 अप्रैल संपर्क : 9236518934

इलाहाबाद दिनांक : 4 अप्रैल संपर्क : 9935378914

समय और स्थल की जानकारी के दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

भारत में पूज्य नीरुमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- ★ ‘दूरदर्शन गिरनार’ पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- ★ ‘अरिहंत’ चैनल पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9
- ★ ‘वालम’ पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)
- ★ ‘साधना’ पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दीमें)
- ★ ‘दूरदर्शन उत्तरप्रदेश’ पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दीमें)
- ★ ‘दूरदर्शन सह्याद्रि’ पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठीमें)
- ★ ‘दूरदर्शन सह्याद्रि’ पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 सोम से शुक्र और 11-30 से 12 शनि-रवि (मराठीमें)
- ★ ‘आस्था कन्ड़ा’ पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्ड़ामें)
- ★ ‘आस्था’ पर हर रोज़ रात 10 से 10-20 (हिन्दीमें)
- ★ ‘दूरदर्शन चंदना’ पर सोमवार से गुरुवार शाम 7-30 से 8 (कन्ड़ामें)

USA - Canada

- ★ ‘TV Asia’ पर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST

UK

- ★ ‘MA TV’ पर रोज़ शाम 5-30 से 6-30 GMT

Australia

- ★ ‘Rishtey’ पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapor - SA - UAE

- ★ ‘Rishtey’ पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

USA - UK - Africa - Australia

- ★ ‘आस्था ग्लोबल’ पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30 (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

ध्रांगधा त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में... दिनांक 24 से 26 फरवरी 2023

24 फरवरी (शुक्र) शाम 7-30 से 10-30 - सत्संग (स्थानिक महात्माओं और नए मुमुक्षुओं के लिए)

25 फरवरी (शनि) शाम 7 से 10-30 - ज्ञानविधि

26 फरवरी (रवि) सुबह 10 से 1 - प्राणप्रतिष्ठा

शाम 4-30 से 7-30 - प्रक्षाल-पूजन-आरती

स्थल : 'ध्रांगधा त्रिमंदिर', फन पोईंट होटल के पीछे, हलवद रोड, ध्रांगधा. **संपर्क :** 9426850299

विशेष सूचना : प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएंगी। जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।

अडालज त्रिमंदिर

18 मार्च (शनि) शाम 5-30 से 7 - सत्संग

19 मार्च (रवि) शाम 4 से 8-30 - ज्ञानविधि

19 मार्च (रवि) पूज्य नीरुमाँ की 17वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम

Pujya Deepakbhai's UK - Germany Satsang Schedule (2023)

Date	Day	From	To	Event	Venue
29-Mar-23	Wed	7:30 PM	10:00 PM	Aptaputra Satasang	Robert Napier School, Third Avenue, Kent, ME7 2LX
30-Mar-23	Thu	7:00 PM	10:00 PM	GNAN VIDHI	
01-Apr-23	Sat	7:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
02-Apr-23	Sun	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	Shree Prajapati Community Centre, 21 Ulverscroft Rd, Leicester, LE4 6BY
02-Apr-23	Sun	4:30 PM	7:30 PM	GNAN VIDHI	
03-Apr-23	Mon	3:30 PM	7:00 PM	SATSANG	
14-Apr-23	Fri	7:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
15-Apr-23	Sat	8:30 AM	12:30 PM	Simandhar Swami small idols Pratishtha	Harrow Leisure Centre, Byron Hall, Christchurch Avenue, Harrow, HA3 5BD
15-Apr-23	Sat	7:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
16-Apr-23	Sun	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
16-Apr-23	Sun	4:30 PM	7:30 PM	GNAN VIDHI	
17-Apr-23	Mon	7:30 PM	10:00 PM	SATSANG	
21-24 Apr-23		All day		Akram Vignan Event	Willingen, Germany

त्रिमंदिरों के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, मुंबई : 9323528901, अंजार : 9924346622, मोरबी : 9924341188, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557, गोधारा : 9723707738, जामनगर : 9924343687. अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) : 9574001445, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830080820 यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, यु.के.: +44 330-111-3232, ऑस्ट्रेलिया: +61 402179706

अडालज : परम पूज्य दादाश्री की उपवतिधि : ता. 2 जनवरी 2023



अडालज : श्रीमंदिर संकुल में फूड मेला और स्लोहमिलन : ता. 8 जनवरी 2023



फरवरी 2023
वर्ष-18 अंक-4
अखंड क्रमांक - 208

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

जगत् विस्मृत करवाए, उसीको आनंद कहते हैं

जीवमात्र के भीतर भरपूर आनंद भरा हुआ ही है, लेकिन आत्मा का वह आनंद आना बंद हो गया है। कथाय, क्लेश, राग-द्वेष होने से आत्मा पर आवरण आ जाता है और आनंद चला जाता है। सच्चा आनंद एक सरीखा रहता है, बहुत तृप्ति रहती है। उस आनंद का वर्णन ही नहीं हो सकता। क्रोध-मान-माया-लोभ की गैरहाजिरी, वही आनंद है। जो संसारी आनंद आता है, वह मूळी का आनंद है, ब्रान्डी (दारु) पीने जैसा। जगत् ने (सच्चा) आनंद देखा ही नहीं है। आनंद में थकान नहीं लगती, बोरियत नहीं होती। जगत् विस्मृत करवाए, उसीको आनंद कहते हैं और वही आत्मा का आनंद है। आनंद तो निरुपाय आनंद होना चाहिए, मुक्त आनंद होना चाहिए।

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation -
Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.